सितम्बर-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०२३

धर्म ध्वजा को मन में धारें,
अधर्म त्याग को उत्तम मानें।
यही कर्म सर्वोपरि जानें,
सत्यार्थ शिक्षा को खूब बखानें।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १४३

भारत के सरताज

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
भाद्रपद कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

September - 2023

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०८

स्त्रियों को गायत्री मन्त्र बोलने तथा वेद पढ़ने का पूरा अधिकार

२४

समस्याओं के निदान के पश्चात् ही उनका निराकरण

समाचार

०४ वेद सुधा
०७ सत्यार्थ मित्र बनें
१२ जीवन जीने का पर्व है श्रावणी पर्व
१५ स्वराज्य और वेद
१७ भाषा और लिपि
२७ अंजीर का सेवन है लाभदायक
२८ कथा सरित- कहानी दयानन्द की
३०

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १२ अंक -०५

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

निरभिमान होकर जिज्ञासा कर

तमित्पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत्।
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचोऽ स्य क्रत्वा सचते अप्रदृपितः।। -ऋग्वेद १/१४५/२

तम् इत्- उसको [से] ही, **पृच्छन्ति-** पूछते हैं, प्रश्न करते हैं, **सिमः न-** सब नहीं, **विपृच्छन्ति-** पूछते अथवा विरुद्ध प्रश्न या उल्टा प्रश्न नहीं पूछते। **धीरः-** [जिस] धीर ने, ध्यानी ने, **इव-** मानो, **स्वेन मनसा-** अपने मन से, **यत् अग्रभीत्-** जिसको ग्रहण कर लिया, **न प्रथमम्-** न पहली [और], **न अपरं वचः-** न दूसरी बात, **मृष्यते-** मसली जाती है। **अस्य-** इस [ज्ञानी] के, **क्रत्वा-** ज्ञान से, कर्म से, **अपदृपितः-** निरभिमान, **सचते-** सम्बद्ध होता है।

व्याख्या

जिज्ञासु को चाहिए कि जब उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो, तो हर एक से न पूछता फिरे, वरन् ऐसे मनुष्य से पूछे; जिसने उस तत्त्व का साक्षात्कार किया हो। मन में मानो उसे ग्रहण कर (पकड़) रक्खा हो। किसी वस्तु को मन से तभी पकड़ा जा सकता है, जब उसका रहस्य हृदयंगम कर लिया गया हो। जिसने जिस तत्त्व का मनन नहीं किया, विचार नहीं किया, जिसको स्वयं उस पदार्थ का बोध नहीं, वह जिज्ञासु को क्या समझाएगा? वेद ने तभी तो कहा-

स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत्= स्वयं जिसने मननपूर्वक जिसको ग्रहण कर रक्खा है।

जब जिज्ञासु यथार्थ ज्ञानी गुरु को प्राप्त कर ले, तब उसे चाहिए कि अपनी मन की शंका सीधे और स्पष्टरूप में उसके आगे रख दे। इधर-उधर के व्यर्थ और उलटे प्रश्नों में अपना और गुरु का बहुमूल्य समय नष्ट न करे, अर्थात् जिज्ञासु गुरु के साथ जल्प या वितण्डा न करे। हार-जीत को सामने रखकर जो बातचीत की जाती है, शास्त्रकार उसे 'जल्प' कहते हैं। हार-जीत को सामने रखकर जो बातचीत की जाए और जिसमें नाम लेकर अपना मत और ज्ञान न बताया जाए, केवल दूसरे पक्षवाले का खण्डन ही किया जाए, उस बातचीत को 'वितण्डा' कहते हैं।

गुरु और शिष्य की बातचीत को शास्त्रकार 'वाद' का नाम देते हैं। किसी-किसी शास्त्र में 'वाद' या 'संवाद' भी कहा गया है और संवाद का अर्थ, 'शमाय वादः' 'समाय वादः', अर्थात् 'शान्ति प्राप्ति के लिए वाद' या 'समत्वप्राप्ति के लिए वाद' किया गया है। तात्पर्य यह कि प्रश्नोत्तर का उद्देश्य शान्ति-प्राप्ति होना चाहिए। जिज्ञासा से चित्त में विकलता= बेचैनी उत्पन्न होती है, उसको शान्त करना, बेचैनी दूर करना प्रश्न करने का लक्ष्य होना चाहिए। ऐसे जिज्ञासु की **'न मृष्यते प्रथमं नापरं वचः'=** न पहली और न दूसरी, अर्थात् न मुख्य

और न गौण बात मसली जाती है, अर्थात् कृपालु गुरु अत्यन्त कृपा और धारणा से शिष्य की प्रत्येक बात का समाधान करता है। उसकी किसी बात का तीव्र प्रतिवाद करके उसका उत्साह भंग नहीं करता। **'न मृष्यते.... वचः'** का एक अर्थ ऐसा भी हो सकता है कि उस जिज्ञासु की 'न पहली और न दूसरी बात सही जाती है।' अर्थात् जो जिज्ञासु, जिज्ञासु न बनकर जिगीषु= जीत का इच्छुक बनकर पूछता है, ज्ञानी गुरु उसकी किसी बात को सहन नहीं करते, वरन् तीव्र खण्डन करके उसका मान-मर्दन कर देते हैं, उसके अहंकार को तोड़ देते हैं, अतः जब भी किसी आत्मनिष्ठ ब्रह्मवित् से जिज्ञासा करो, विनम्रता से, सुशीलता से तथा निरभिमानिता से जिज्ञासा करो। इसी भाव को सम्मुख रखकर चौथे चरण में भगवान् ने समझाया है-

'अस्य क्रत्वा सचते अप्रदृपितः'-

निरभिमान ही इसके ज्ञान-कर्म से युक्त होता है।

जो अभिमानी बनकर आया है, गुरु उसे क्यों कुछ बताने लगा। जो अभिमानशून्य होकर जिज्ञासा करता है, गुरु उसे अपना सारा ज्ञान और अनुष्ठान बता देता है। एक-एक रहस्य जिसे वह छिपाये बैठा है, उसे अधिकारी समझकर बता देता है। केवल बताता ही नहीं, वरन् करा देता है, जिससे क्रियात्मकरूप में करने से उसके सारे संशय नष्ट हो जाते हैं।

वेदादि शास्त्र जिज्ञासु के लिए निरभिमानिता पर बहुत बल देते हैं। निरुक्तकार महर्षि यास्क ने अपने निरुक्तशास्त्र (२/१/४) में पुराने किसी आप्त का वचन उद्धृत किया है। वह मानो इस मन्त्र के चौथे पाद की व्याख्या है। वह इस प्रकार है-

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽ हमस्मि।
असूयकायानृजवेऽ यताय न मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम्।।
यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्।
यस्ते न द्रुह्येत् कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्।।

विद्या ब्राह्मण के पास आकर बोली- मेरी रक्षा कर, मै तेरी कल्याणकारिणी हूँ, तेरी निधि हूँ। ऐसे मनुष्य को मेरा उपदेश न करना, जो असूयक= ईर्ष्यालु हो, कुटिल हो, अजितेन्द्रिय हो, ताकि मैं बलवती बनी रहूँ। जिसको तू पवित्र, अप्रमादी, बुद्धिमान्, ब्रह्मचारी समझे और जो तेरी कभी निन्दा न करे, हे ब्रह्मवेत्तः! उसे मेरा उपदेश करना।

इसी से मिलते-जुलते वचन मनुस्मृति में मिलते हैं-

विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम्।
असूयकाय मां मा दास्तथा स्यां वीर्यवत्तमा।।
यमेव तु शुचिं विद्यान्नियतब्रह्मचारिणम्।
तस्मै मां ब्रूही विप्राय निधिपायाप्रमादिने।। - मनु. २/११४-११५

विद्या ब्राह्मण के पास आकर बोली- मैं तेरी कल्याणकारिणी हूँ, मेरी रक्षा कर। निन्दक के प्रति मुझे न देना, ताकि मैं अत्यन्त बलवती हो सकूँ। जिसको तू पवित्र और नियमपूर्वक ब्रह्मचारी जाने, उस प्रमादरहित मेधावी ब्रह्मचारी के प्रति मेरा उपदेश कर।

तात्पर्य यह है कि विद्यारत्न, विशेषकर ब्रह्मविद्यारूपी महामूल्य रत्न उसको देना चाहिए, जो उसे सम्भाल सके। घमण्डी मनुष्य प्रमादी होता है, वह अमूल्य निधि को, बहुमूल्य कोष को नहीं सम्भाल सकता, अतः वह इसका अधिकारी नहीं है। प्रमादी मनुष्य तो ज्ञान, विशेषकर तत्त्वज्ञान को समझ ही नहीं पाता। जैसाकि यम ने

नचिकेता को मार्मिक शब्दों में कहा है-

न सांपरायः प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्। - कठोपनिषद् १/२/३

बालक, प्रमादी तथा धनमद से उन्मत हुए को यह साम्पराय= आना-जाना संसार-सार सूझता नहीं।

कर्त्तव्य के समय जो कार्य न कर दूसरे समय के लिए टाल देता है, वह प्रमादी है। गुरु देने को तैयार हैं, शिष्य प्रमाद का शिकार होकर सुनने या ग्रहण करने को तैयार नहीं है। ऐसे को उपदेश देना उस पर अत्याचार करना है। उसकी मनोभूमि उपदेश-बीज को धारण करने के अयोग्य, असमर्थ है, अर्थात् ऊसर है। उसमें बीज डालना, बीज को गंवाना है। इसी बात का विचार कर शास्त्रकारों ने अधिकारी और अनधिकारी की चर्चा की है। स्वयं भगवान् ने जिज्ञासु में इन लक्षणों का होना आवश्यक बतलाया है। यथा-

आशृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृळीकाय वेधः।
देवाय शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद्यमीळे॥ - ऋग्वेद ४/३/३

हे बुद्धिमन्! मेघ के समान यज्ञ करनेवाला, मधुर पदार्थों का सृजन करनेवाला मैं जिसकी स्तुति करता हूँ, ऐसे पूरी तरह सुननेवाले, घमण्ड न करनेवाले, मनुष्यता को सफल करनेवाले, प्रसन्न करनेवाले, शान्त स्वभाववाले जिज्ञासु को ज्ञान तथा शिक्षा सिखा।

इस मन्त्र में भी जिज्ञासु के अदृपित होना= निरभिमान होना आवश्यक बताया गया है।

सारांश यह है कि जिज्ञासु जहाँ गुरु की परख करे; गुरु में अपेक्षित गुणों के न होने पर उससे दूर रहना ही अच्छा है। वहाँ गुरु का कर्त्तव्य है कि वह भी शिष्य की भली-भाँति परीक्षा करे और देखे कि यह जिज्ञासु है या जिगीषु है, अर्थात् यह पढ़ने आया है या लड़ने आया है। दूसरा यह भी गुरु को देखना चाहिए कि किस प्रकार यह मनुष्य जिज्ञासु बनाया जा सकता है, जिससे उसका कल्याण हो।

इससे पूर्व छठे मन्त्र में गुरु के लक्षण बताये गये हैं। गुरु पहुँचा हुआ सिद्ध होना चाहिए, अर्थात् उपदेश करने योग्य तत्त्व का पारगामी ज्ञात होना चाहिए। उसे उपदेश्य वस्तु के सम्बन्ध में जहाँ सामान्य ज्ञान हो, वहाँ विशेष ज्ञान होना भी अनिवार्य है, अर्थात् उसके सम्बन्ध में होने वाली सभी शंकाओं, संशयों को दूर करने में पूर्णतया समर्थ होना गुरु के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस सातवें मन्त्र में शिष्योचित गुणों की चर्चा है। शिष्य का अदृपित (अभिमानरहित), विनीत होना अनिवार्य है। विनय के अभाव में वह शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकेगा। विनय के साथ शिष्य में सावधान होकर गुरुवचन को श्रवण करने तथा मनन करने की शक्ति भी होनी चाहिए, अर्थात् आलस्य तथा प्रमाद से रहित शिष्य ही विद्या का पात्र होता है। मनुष्यत्व सम्बन्धी परमज्ञान-आलस्य, प्रमाद, उच्छृखंलता एवं अविनय से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

भजनोपदेशक श्री इन्द्रदेव जी पीयूष का भव्य सम्मान

वैदिक संस्कृति के उपासक, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा उद्घोषित 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के मिशनरी, मनुर्भव जनया दैव्यम् इस वेद सन्देश को स्वजीवन तथा जन-जन में साकार रूप प्रदान कराने में अहर्निश प्रयत्नशील, वाद्ययन्त्रों से परिपूर्ण सुमधुर संगीत से भजनोपदेश व स्वयं की पद्य रचनाओं से तथा लेखों द्वारा समाज को नई दिशा देने में सतत् प्रयत्नरत श्रद्धेय श्री इन्द्रदेव जी पीयूष सुपुत्र (स्मृतिशेष) श्री पन्नालाल जी पीयूष, उदयपुर का भव्य सम्मान भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् एवं पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी के सान्निध्य में श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून में आयोजित वार्षिक अधिवेशन एवं सम्मान समारोह में किया गया। हम उदयपुर के सभी आर्यजन आपके इस सम्मान से अभिभूत हैं तथा आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं चिरायुष्य जीवन की मंगल कामना करते हैं।

- अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर

बैंक एकाउन्ट का विवरण :

AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001

में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्री रमेश मित्तल
फतहनगर

श्रीमती उषा सरीन
दिल्ली

श्री सुरेश मित्तल
फतहनगर

श्री शत्रुंजय रावत
हैदराबाद

श्रीमती संगीता नेमा
नई दिल्ली

श्री देवराज आर्य
दिल्ली

श्री रमेश चन्द्र जायसवाल
उदयपुर

श्रीमती शारदा आर्या
नई दिल्ली

आत्म निवेदन

स्त्रियों को गायत्री मन्त्र बोलने तथा वेद पढ़ने का पूरा अधिकार

आज अत्यन्त आश्चर्य इस बात पर होता है जब इस २१वीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति को लेकर किसी के मन में कोई दुविधा नहीं है, जब वे जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहीं हैं बल्कि अनेक क्षेत्रों में उनसे उत्कृष्ट काम कर रहीं हैं तब तथाकथित जिम्मेदार लोगों द्वारा पुनः ऐसी बातों को कहने का दुस्साहस किया जा रहा है जो कभी विशुद्ध वैदिक संस्कृति का अंग कभी नहीं रहीं। यह सही है कि एक समय मध्यकाल में जब भारत ने विदेशी शासन काल के दंश को भोगा तब वह काल खण्ड आया जब महिलाओं को ऐसी रूढ़ियों तथा ऐसे बन्धनों में जकड़ दिया गया कि उनका जीवन नारकीय बन गया था। बहुविवाह, बाल विवाह, विधवा का नारकीय जीवन महिलाओं के जीवन को मथ रहे थे। उनका पढ़ना-लिखना पूर्णतः प्रतिबन्धित था। वेद पढ़ने की तो कथा ही क्या? इस सबको हिन्दू धर्मगुरुओं ने शास्त्रीय आधार ही नहीं भगवती श्रुति का आधार देने के लिए घोषणा कर दी कि यह सारे प्रतिबन्ध वेद सम्मत हैं, जबकि वस्तु स्थिति यह थी कि उन्होंने स्वयं वेद के दर्शन भी नहीं किये थे। उनके इस दुष्कृत्य से जो हानि हुयी वह अकल्पनीय थी। यह प्राकृतिक न्याय के घोर उल्लंघन वाली व्यवस्था थी अतः कुछ महापुरुष इसके विरोध में अवश्य आये परन्तु इन कुरीतियों को वेदाधारित बताने का खण्डन वे भी नहीं कर पाए, जबकि वेद को परम प्रमाण मानने वाले हिन्दू समाज में परिवर्तन लाने के लिए, सुधार लाने के लिए यह आवश्यक था कि यह प्रमाणित किया जाय कि वेद में इन कुरीतियों का संकेत मात्र भी नहीं है। यह कार्य किया महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। बाकी सब विद्वान् केवल वेदों का नाम लेने वाले थे जबकि महर्षि वेदों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्होंने चुनौती देते हुए इस बात का खण्डन किया कि वेदों में ऐसे कोई भी नारी विरोधी तथाकथित निर्देश हैं। इसके विरुद्ध उन्होंने वेदमंत्रों से एवं अन्य तर्कों से इस मत का खण्डन किया कि स्त्रियों के वेद पठन के सन्दर्भ में वेद में कोई प्रतिबन्ध है।

यह बात हमने आज क्यों आपके समक्ष रखी है? क्योंकि सोशल मीडिया पर आजकल आचार्य धीरेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य अनिरुद्ध जी तथा आचार्य देवकीनन्दन ठाकुर जी के इस भाव से युक्त वक्तव्य प्रसारित हो रहे हैं कि नारी को, माताओं को गायत्री मन्त्र पढ़ने का अधिकार नहीं है।

इस सम्बन्ध में इन तीनों का मिलाजुला तर्क है-

१. यज्ञोपवीत संस्कार वाला व्यक्ति ही गायत्री का जाप कर सकता है। और क्योंकि स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार नहीं है इसलिए स्त्रियाँ गायत्री जप नहीं कर सकतीं। (यह धीरेन्द्र शास्त्री जी का मत है)

२. अगर हम वेदों की बात मानें तो माताओं को गायत्री मन्त्र नहीं बोलना चाहिए। (देवकीनन्दन ठाकुर जी)

३. लड़कियाँ गायत्री मन्त्र का जाप नहीं कर सकतीं। (आचार्य अनिरुद्ध जी)

कितने आश्चर्य की बात है कि आज के युग में जब अन्य कोई व्यक्ति तनिक भी महिला विरोधी बात कह दे तो तूफान खड़ा हो जाता है (होना भी चाहिए) वहाँ इन तीनों प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा महिलाओं के मूल अधिकारों पर ही प्रश्न खड़ा कर उसे पुरुष से कमतर सिद्ध कर और इसके लिए वेदादि शास्त्रों को असत्य रूप से प्रस्तुत कर बात कही जाने पर सर्वत्र मौन है। आज सारे राष्ट्रीय चैनल दिन-रात इन लोगों कि महिमा वर्धन में घण्टों का एयर टाइम खर्च करने में संकोच नहीं करते, इनके तथाकथित

चमत्कारों को सत्य प्रमाणित करने में ये खोजी पत्रकार अपना सारा कौशल प्रयुक्त कर रहे हैं पर उक्त बयानों पर सन्नाटा पसरा है।

इस सन्नाटे को तोड़ा है हमारी आर्य विदुषी बहिन अंजली आर्या ने। उन्होंने इन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। हमें गर्व है उन पर। परन्तु हमें यह भी निश्चय है कि इनमें से एक भी शास्त्रार्थ के लिए नहीं आयेंगे। जबकि टीवी की हर डिबेट में ये सम्मिलित होते हैं। इसी से हमने सत्यार्थ सौरभ में इस विषय को उठाने का निश्चय किया है, ताकि पाठकगण सत्य जान इसका प्रचार कर सकें।

हिन्दू धर्म में महिलाओं को वेदमंत्र पढ़ने का अधिकार नहीं है यह कहना नितान्त अज्ञानता है, जो ऐसा कहते हैं आर्य (हिन्दू) धर्म की अवमानना के दोषी हैं। आगे कुछ लिखने के पहले दो वेदमंत्र प्रस्तुत हैं साथ ही इनके महर्षि दयानन्द द्वारा किए गये भाष्य भी। प्रथम मन्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि विद्या ग्रहण के बिना स्त्रियों को कुछ भी सुख नहीं होता।

मथीद्यदीं विभृतो मातरिश्वा गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत्।
आदीं राज्ञे न सहीयसे सचा सन्ना दूत्यं१ भृगवाणो विवाय।। - ऋग्वेद १/७१/४

अर्थात् विद्या-ग्रहण के विना स्त्रियों को कुछ भी सुख नहीं होता।

अब वह मन्त्र प्रस्तुत है जिसमें एक गायत्री मन्त्र ही नहीं चारों वेदों को उनके समस्त उपांगों सहित पढ़ने का निर्देश है न सिर्फ पढ़ने का वरन् पढ़ाने का भी निर्देश है।

गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।। - ऋगवेद १/१६४/४१

जो स्त्री समस्त सांगोपांग वेदों को पढ़के पढ़ाती हैं, वे सब मनुष्यों की उन्नति करती हैं।

अब बताइये क्या कहेंगे धीरेन्द्र शास्त्री, देवकीनन्दन ठाकुर जी। क्या आप इन वेद मन्त्रों के अन्य अर्थ कर सकते हैं? जब स्त्री और पुरुष सब परमपिता परमात्मा के पुत्र और पुत्री हैं तो वह उनमें विभेद क्यों करेगा? क्या प्रभु पक्षपाती हैं।

और गायत्री मन्त्र स्त्री क्यों न पढ़ें? इस मन्त्र में ऐसा क्या है जिसे अगर स्त्री पढ़ ले, जान ले तो सृष्टि उलट पलट जायेगी? यह भी जान लें। गायत्री एक छन्द का नाम है जिस छन्द में अनेक वेदमंत्र हैं। गायत्री उनमें से एक है। यह अपने दिव्य अर्थ और प्रार्थना के सच्चे स्वरूप के कारण प्रसिद्ध हो गया है। शास्त्री बन्धुओं! यह तो पता नहीं कि आपने शास्त्री की परीक्षा किस गुरुकुल से उत्तीर्ण की है, पर आप भी जान लें कि वेदों के प्रकाण्ड पण्डित महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इसका क्या अर्थ लिखा है-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
'भवतु नातोऽन्यं भवत्तुल्यं भवतोऽधिकं च कश्चित् कदाचिन्मन्यामहे।....'

हे मनुष्यो! जो सब समर्थों में समर्थ सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्य मुक्तस्वभाव वाला, कृपासागर, ठीक-ठीक न्याय का करनेहारा, जन्ममरणादि क्लेशरहित, आकाररहित, सब के घट-घट का जानने वाला, सब का धर्त्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करनेहारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त, जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है उस परमात्मा का जो शुद्ध चेतनस्वरूप है उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिये कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामीस्वरूप हम को दुष्टाचार अधर्मयुक्त मार्ग से हटा के श्रेष्ठाचार सत्य मार्ग में चलावें, उस को

छोड़कर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें। क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है वही हमारा पिता राजा न्यायाधीश और सब सुखों का देनेहारा है।

अब इन शास्त्री बन्धुओं सहित कोई भी बन्धु अपने हृदय पर हाथ रखकर बताये कि इस मन्त्र में ऐसा क्या है जो स्त्री को, माताओं और बहिनों को नहीं जानना चाहिए। ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव को जानकर, उसके समक्ष अपने को समुद्र में बिन्दुवत मानकर इस उद्देश्य से उसका ध्यान करने की बात है कि वह हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग में चलावे। क्या चराचर जगत् के स्वामी परमेश्वर से इस प्रकार की प्रार्थना करने से ये तथाकथित धर्मगुरु महिलाओं को वंचित रखना चाहते हैं। प्रार्थना का अधिकार तो पुत्र-पुत्री सभी को है। अतः गायत्री मन्त्र सहित सम्पूर्ण मन्त्रों को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार मानव मात्र को है।

अब हम इस बात पर आते हैं कि गायत्री मन्त्र का पाठ केवल वही कर सकता है जो यज्ञोपवीत धारण करता है और क्योंकि स्त्रियों को यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं है अतः वे गायत्री मन्त्र भी नहीं पढ़ सकती हैं। यह दूसरा झूठ है। स्त्रियों को पुरुषों की भाँति ही यज्ञोपवीत का अधिकार है। उनका यह अधिकार वेदादि शास्त्रों द्वारा कहीं भी बाधित नहीं है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं- 'द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी-अपनी पाठशाला में भेज दें।'

गायत्री मन्त्र के विषय में वे विशेष रूप से लिखते हैं-

'पिता-माता वा अध्यापक अपने लड़का-लड़कियों को अर्थसहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें।'

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में इस विषय को विस्तार से व्याख्यायित किया है। उन्होंने जहाँ शास्त्रीय आधार पर वेद पढ़ने में स्त्रियों के अधिकार को प्रमाणित किया है वहीं ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध किया है कि आर्यावर्त्त में स्त्रियों को ये अधिकार निर्बाध प्राप्त थे। महिला विदुषियों ने वेदमंत्रों का साक्षात्कार तक किया है। वे ऋषिकाओं के पद पर आसीन थीं। महर्षि ने इस अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय में प्राकृतिक न्याय की भूमिका का विश्लेषण भी किया है। अतः हम उनके तर्कों को यहाँ प्रस्तुत करते हैं जो इन तीनों शास्त्री बन्धुओं के साथ इन जैसे ही सभी महानुभावों कि बुद्धियों को परिष्कृत करने में समर्थ हैं।

प्रश्न- क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें? जो ये पढ़ेंगे तो हम फिर क्या करेंगे? और इनके पढ़ने में प्रमाण भी नहीं हैं। जैसा यह निषेध है-

स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः।

स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

उत्तर- सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है। तुम कुआ में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोलकल्पना से हुई है। किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नहीं। और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय में दूसरा मन्त्र है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यांꣳशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च॥

परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिये (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आ वदानि) उपदेश करता हूँ वैसे तुम भी किया करो।

यहाँ कोई ऐसा प्रश्न करे कि 'जन' शब्द से द्विजों का ग्रहण करना चाहिये क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं।

उत्तर- (ब्रह्मराजन्याभ्यां) इत्यादि देखो परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, (अर्याय) वैश्य, (शूद्राय) शूद्र, और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अतिशूद्रादि के लिये भी वेदों का प्रकाश किया है अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके दुःखों से छूट कर आनन्द को प्राप्त हों। कहिये। अब तुम्हारी बात मानें वा परमेश्वर की? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इस को न मानेगा वह नास्तिक कहावेगा क्योंकि **'नास्तिको वेदनिन्दकः'** वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है। महर्षि दयानन्द पुनः प्राकृतिक न्याय का आधार लेकर कहते हैं।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिये निषेध और

द्विजों के लिये विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सब के लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं। और जहाँ-जहाँ निषेध किया है उस का यह अभिप्राय है कि जिस को पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहाता है। उस का पढ़ना-पढ़ाना व्यर्थ है। और जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है। देखो! वेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण-

ब्रह्मचर्येण कन्या१ युवानं विन्दते पतिम्। - अथर्ववेद ११/५/१८

जैसे लड़के ब्रह्मचर्य्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी, अपने अनुकूल, प्रिय, सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं, वैसे (कन्या) कुमारी (ब्रह्मचर्य्येण) ब्रह्मचर्य्य सेवन से वेदादिशास्त्रों को पढ़, पूर्णविद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश, प्रिय, विद्वान् (युवानम्) पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को (विन्दते) प्राप्त होवे।

इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्। - महा. अनु. ३/१६

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वरसहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके?

भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विदुषी हुई थीं यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् हो तो नित्यप्रति देवासुर-संग्राम घर में मचा रहै फिर सुख कहाँ? इसलिये जो स्त्री न पढ़े तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्योंकर हो सकें तथा राजकार्य न्यायाधीशत्वादि गृहाश्रम का कार्य जो पति को स्त्री और स्त्री को पति प्रसन्न रखना, घर के सब काम स्त्री के आधीन रहना विना विद्या के इत्यादि काम अच्छे प्रकार कभी ठीक नहीं हो सकते।

देखो! आर्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं क्योंकि जो न जानती होतीं तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकतीं? और युद्ध कर सकतीं। इसलिये ब्राह्मणी को सब विद्या, क्षत्रिया को सब विद्या और युद्ध तथा राजविद्याविशेष, वैश्या को व्यवहारविद्या और शूद्रा को पाकादि सेवा की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिये। जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिये। वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्पविद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिये। क्योंकि इनके सीखे विना सत्याऽसत्य का निर्णय, पति आदि से अनुकूल वर्त्तमान, यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, वर्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिये वैसा करना-कराना वैद्यकविद्या से औषधवत् अन्नपान बना और बनवाना नहीं कर सकती। जिससे घर में रोग कभी न आवे और सब लोग सदा आनन्दित रहैं। शिल्पविद्या के जाने विना घर का बनवाना, वस्त्र आभूषण आदि का बनाना बनवाना, गणितविद्या के विना सब का हिसाब समझना समझाना, वेदादि शास्त्रविद्या के विना ईश्वर और धर्म को न जानके अधर्म से कभी नहीं बच सके। (इसलिए स्त्री-पुरुष सभी मानवमात्र को वेदादि शास्त्र पढ़ने और तदनुकूल आचरण करना आवश्यक है) स्त्रियों का वेदाध्यन सन्तानों के निर्माण के लिए अत्यावश्यक है। माता ही सन्तान का निर्माण करती है। ऋग्वेद में कहा है-

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। - ऋग्वेद ५/७९/१

जैसे प्रातर्वेला दिन को उत्पन्न करके सब को जगाती है, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्री अपने सन्तानों को अविद्या के सदृश वर्त्तमान निद्रा से उठा कर विद्या को जनाती है। इसी कारण राजा तक को यह निर्देश है कि वह कुमारों के साथ कन्याओं को भी ब्रह्मचर्य्य में रख कर विद्वान् करे।

कन्यानां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्। - मनु ७/१५२

राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखके विद्वान् कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उस के माता-पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का वा लड़की किसी के घर में न रहने पावें किन्तु आचार्यकुल में रहैं। जब तक समावर्त्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावे।

आशा है अब जो लोग यह मानते हैं कि महिलाओं को वेदादि शास्त्रों की आज्ञा से वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है उनका समाधान हो गया होगा। बन्द आँखें खुल गयीं होंगी।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

श्रावणी व रक्षाबन्धन पर्व आगामी ३० अगस्त पर

वेदों का स्वाध्याय एवं वैदिक जीवन जीने का पर्व है श्रावणी पर्व

श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन देश के आर्य व हिन्दू बन्धु श्रावणी पर्व को मनाते हैं। वैदिक धर्म तथा संस्कृति १.९६ अरब वर्ष पुरानी होने से विगत तीन-चार हजार वर्ष पूर्व उत्पन्न अन्य सब मत-मतान्तरों से प्राचीन है। वैदिक धर्म के दीर्घकाल के इतिहास में लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के कारण धार्मिक एवं सामाजिक अवनति का दौर चला जो अब तक न तो थमा है और न ही हम व विश्व के लोग पुनः अपने प्राचीन वैदिक धर्म की ओर लौट ही सके हैं। सौभाग्य से ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरकाल में देश में ऋषि

दयानन्द जी का आगमन हुआ था जिन्होंने प्राचीन वैदिक धर्म एवं संस्कृति का वैदिक काल के अनुरूप पुनरुद्धार किया। अविद्यायुक्त मत-मतान्तरों का सहयोग न होने के कारण देश व समाज से अविद्या दूर न हो सकी। परिणामतः आज भी वेदविरोधी व अविद्यायुक्त मत-मतान्तरों का प्रचलन व प्रभाव विद्यमान है। इन कारणों से प्राचीन काल में प्रचलित वेद-सम्मत श्रावणी पर्व का वास्तविक स्वरूप अब भी प्रायः आँखों से ओझल है। वर्तमान काल में श्रावणी पर्व मनाया तो जाता रहा है परन्तु इसका स्वरूप वैदिक नहीं रहा है। मध्यकाल व मुस्लिम शासकों के समय से यह पर्व रक्षाबन्धन पर्व के रूप में प्रचलित हो गया जो वर्तमान में इसी रूप में मनाया जाता है। दिनांक १० अप्रैल, १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना के बाद हमारे वैदिक विद्वानों ने इस पर्व की शास्त्रीय दृष्टि से जाँच पड़ताल की तो ज्ञात हुआ कि प्राचीन काल में यह पर्व श्रावणी पर्व वा ऋषि तर्पण के रूप में मनाया जाता था जिसका उद्देश्य श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन वेदों का स्वाध्याय व पारायण आरम्भ किया जाता था जिसे उपाकर्म कहते हैं। इस दिन से पौष मास की पूर्णिमा जो चतुर्मास पूरे होने पर आती है, इस उपाकर्म का उत्सर्जन व समापन किया जाता था। अतः श्रावणी पर्व सृष्टि के आरम्भ से श्रावणी, उपाकर्म व ऋषि-तर्पण पर्व के रूप में मनाया जाता रहा है। पर्व का उद्देश्य पितृयज्ञ एवं अतिथि यज्ञ के समान वेद के मर्मज्ञ ऋषियों को सन्तुष्ट करना होता था जिससे मनुष्य का अपना ही कल्याण होता है। ऋषियों की सबसे प्रिय वस्तु वेद का स्वाध्याय, उसका रक्षण व सभी मनुष्यों को वेदज्ञान से आलोकित करना था। वह हर समय इसी कार्य में संलग्न रहते थे। यही कार्य उनका प्रियतम व

मनुष्यमात्र का कल्याणकारी था। जो लोग वेदों का अध्ययन करते व उसकी शिक्षाओं पर आचरण करते थे वह लोग ऋषियों को प्रिय होते थे। इसलिये ऋषियों को प्रसन्न व सन्तुष्ट करने के लिये प्राचीन काल में लोग श्रावण मास की पूर्णिमा को वेदों के स्वाध्याय व पारायण का उपाकर्म कर पौष मास की पूर्णिमा पर उसका उत्सर्जन किया करते थे। मध्यकाल में यह परम्परा टूट गई। इस काल में ऋषियों का उत्पन्न होना भी बन्द हो गया था। ऋषि दयानन्द ने वेदाध्ययन व अपनी योग-समाधि की सिद्धि से ऋषित्व को प्राप्त कर वेदों का पुनरुद्धार किया और मध्यकाल में अवरुद्ध सभी वैदिक पर्वों के यथार्थ स्वरूप का अनुसंधान कर उनको प्रचलित कराने का अभियान चलाया। इसी का परिणाम है कि वर्तमान में वैदिक धर्मी आर्यसमाजी लोग रक्षाबन्धन पर्व को श्रावणी पर्व के रूप में मनाते हैं। इस दिन समाज मन्दिरों व गुरुकुलों आदि में विशेष यज्ञों का आयोजन होता है, भजन व प्रवचन होते हैं। बड़ी संख्या में श्रोता समाज मन्दिरों में एकत्रित होते हैं और इस अवसर पर वेदों के महत्व तथा दैनिक जीवन में वेदों के स्वाध्याय तथा ऋषियों के ग्रन्थों का अध्ययन करने की प्रेरणा की जाती है। इस परम्परा से मोक्ष में विचरण करने वाली आत्मायें भी सन्तुष्ट होती होंगीं ऐसा अनुमान होता है। इस कारण से यह पर्व वर्तमान समय में भी ऋषि तर्पण के रूप में मनाये जाने की दृष्टि से सार्थक है। वेदों के स्वाध्याय से मनुष्य का कल्याण होता है। वेदाध्ययन करने से मनुष्य जीवन को पतन के मार्ग पर ले जाने वाले विचारों व पाप-कर्मों से बचता है। उसे भावी जन्म-जन्मान्तरों में श्रेष्ठ योनि व परिवेश में पुनः मानव योनि में पुनर्जन्म मिलने से उन्नति व कल्याण होता है। शास्त्रकारों ने वेदों के स्वाध्याय के अनेक लाभ बताये गये हैं। यह सभी लाभ इस पर्व को मनाते हुए इसकी मूल भावना से एकात्मता उत्पन्न करने से कर्त्ता को प्राप्त होते हैं। अतः श्रावणी पर्व का प्राचीन काल के अनुसार ऋषि तर्पण वा वेद स्वाध्याय के उपाकर्म एवं चार मास बाद उत्सर्जन के रूप में मानने से मनुष्य का जीवन सफलता को प्राप्त होता है। यही इस पर्व की आज के समय में प्रासंगिकता व उपयोगिता है जिसे हमें श्रद्धापूर्वक करना चाहिये।

श्रावणी पर्व के विषय में आर्य पर्व-पद्धति पुस्तक में कहा गया है कि शास्त्रीय विधान के अनुसार मनुष्य को स्वाध्याय से ऋषियों की, होम से देवों की, श्रद्धा से पितरों की, अन्न से अतिथियों की, बलिवैश्वदेव कर्म से कीट-पतंगों आदि प्राणियों की यथाविधि पूजा करनी चाहिये। मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में विशेष अवसरों पर विशेष स्वाध्याय द्वारा विशेष ऋषि तर्पण का विधान है। वेदधर्म के अनुयायियों में नित्य और नैमित्तिक कर्मों की शैली सर्वत्र विद्यमान व प्रचलित है। वैदिक काल में वेदों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों की अविद्यमानता वा विरलता के कारण वेदों और वैदिक साहित्य के ही पठन-पाठन का विशेष प्रचार था। लोग नित्य ही वेदपाठ में रत रहते थे किन्तु वर्षाऋतु में वेद के पारायण का विशेष आयोजन किया जाता था। इसका कारण यह था कि भारत देश वर्षा बहुल तथा कृषि प्रधान देश है। यहाँ की जनता आषाढ़ और श्रावण में कृषि के कार्यों में विशेषतः व्यस्त रहती है। श्रावणी (सावनी) शस्य की जुताई और बुवाई आषाढ़ से प्रारम्भ होकर श्रावण के अन्त तक समाप्त हो जाती है। इस समय श्रावण पूर्णिमा पर ग्रामीण जनता कृषि के कार्यों से निवृत्ति पाकर तथा भावी शस्य के आगमन से आशान्वित होकर चित्त की शान्ति और अवकाश लाभ करती है। क्षत्रियवर्ग भी इस समय दिग्विजय यात्रा से विरत हो जाता है। वैश्य भी व्यापार, यात्रा, वाणिज्य और कृषि से विश्राम पाते हैं। इसलिए इस दीर्घ अवकाश-काल में विशेष रूप से वेद के पारायण और प्रवचन में जनता प्रवृत्त होती थी। उधर ऋषि-मुनियों, संन्यासी और महात्मा लोग भी वर्षा के कारण अरण्य और वनस्थली को छोड़कर ग्रामों के निकट आकर अपना चातुर्मास्य (चौमासा)

बिताते थे। श्रद्धालु श्रोता और वेदाध्यायी लोग उनके पास रहकर ज्ञान श्रवण और वेदपाठ से अपने समय को सफल बनाते थे और ऋषियों के इस प्रिय कार्य से ऋषियों का तर्पण मनाते थे। जिस दिन से इस विशेष वेद पारायण का उपक्रम (प्रारम्भ) किया जाता था, उस को उपाकर्म कहते थे। और यह श्रावण शुदि पूर्णिमा वा श्रावण शुदि पंचमी को होता था। ऋषियों का तृप्तिकारक होने के कारण पीछे से उपाकर्म का नाम ऋषितर्पण भी पड़ गया। यह उपाकर्म वा ऋषि तर्पण विशेष विधि से होता था। इसका विवरण ऋषियों द्वारा निर्मित ग्रन्थों गृह्यसूत्रों में मिलता है। इस प्रकार यह विशेष वेदपाठ प्रारम्भ होकर साढ़े चार मास तक नियमपूर्वक बराबर चला जाता था और पौष मास में उसका 'उत्सर्जन' (त्याग या समापन) होता था। 'उत्सर्जन' भी एक विशेष संस्कार व पर्व के रूप में किया जाता था। उपाकर्म और उत्सर्जन के विधान विविध गृह्यसूत्र ग्रन्थों में कुछ परिवर्तनों के साथ वर्णित हैं। यह विषय विद्वानों द्वारा विचारणीय होता है और इससे वह उपयोगी बातों को समाज के लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कर उससे लाभान्वित कर सकते हैं। सामान्य जनों को श्रावणी पर्व पर वेदाध्ययन व वेदपारायण का वैदिक पद्धति के अनुरूप उपाकर्म करना चाहिये, इसी में इस पर्व की सार्थकता है।

हम समझते हैं कि वर्तमान काल में वैदिक परम्पराओं को जारी रखने के लिये सभी मनुष्यों को श्रावणी पर्व को वेदस्वाध्याय एवं यज्ञ द्वारा ऋषि तर्पण के रूप में ही मान्यता देनी चाहिये और इस अवसर पर वेदाध्ययन का संकल्प लेने का निश्चय करना चाहिये। इससे वैदिक धर्म व संस्कृति का संरक्षण होगा और समाज से अविद्या दूर की जा सकेगी। इस अवसर पर उपलब्ध सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के संरक्षण पर भी ध्यान देना चाहिये जिससे हमारी भावी पीढ़ियाँ हमारे वर्तमान एवं पूर्व विद्वानों के उपयोगी वेद विषयक वैदिक साहित्य से वंचित न हो। श्रावणी पर्व के दिन सभी बन्धुओं को परिवार सहित समाज मन्दिरों तथा गुरुकुलों आदि में जाकर वहाँ बृहद् यज्ञों को करने के साथ भजनों व विद्वानों के सारगर्भित लाभकारी प्रवचनों से लाभ उठाना चाहिये। परस्पर मिलकर भोजन करना चाहिये। सत्संकल्प लेने चाहिये। वेद प्रचार में सहयोग करने हेतु अपना सहयोग देना चाहिये और ठोस वेद प्रचार की योजना बनाई जानी चाहिये। इस अवसर पर समाज में असंगठन की प्रवृत्तियों पर चिन्तन कर संगठन को सदृढ़ बनाने पर भी विचार कर सकते हैं। ऐसा करने में ही इस पर्व को मनाने और हमारे जीवन की सार्थकता है।

श्रावणी पर्व को रक्षा बन्धन पर्व में निहित भाई व बहिन के प्रेम व परस्पर सहयोग की भावना की दृष्टि से जारी रखा जा सकता है, ऐसा आर्यसमाज के अनेक विद्वानों का विचार रहा है। इस रूप में भी हम इस पर्व को मना सकते हैं। इस दिन सभी बन्धु अपने यज्ञोपवीत भी बदलते हैं। इस कार्य को सामूहिक रूप से करना चाहिये जिससे वेदानुयायियों में उत्साह का संचार होता है। इस विषय पर भी विद्वानों के प्रेरक प्रवचन होने चाहिये। यदि हम वेदों के स्वाध्याय, सन्ध्या, अग्निहोत्र तथा वेद प्रचार में सहयोग के कार्य करते रहेंगे तो इससे हमारा कल्याण होगा तथा समाज व देश को भी लाभ होगा। वर्तमान समय में वैदिक धर्म पर अनेक खतरे मण्डरा रहे हैं। इसके लिये हमें संगठित होकर रहना होगा व प्रचार करना होगा। हमें देश की सरकार के धर्म और देश रक्षा के कार्यों में उनका सहयोगी होना चाहिये। आगामी श्रावणी पर्व व रक्षा-बन्धन पर्व को हम इन्हीं भावनाओं से मनायें, ऐसा हम उचित समझते हैं।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

स्वराज्य और वेद

गतांक से आगे.....

इस तत्त्व की पुष्टि यजुर्वेद १०/१७ के निम्नलिखित वाक्य से और अधिक होती है

इन्द्रोसि बिशौजा:= हे राजन् । तू प्रजा के बल बाला इन्द्र है। अर्थात् राजा का मूल प्रजा है (King derives his power from the people)।

कितना स्पष्ट है। पीछे देखने का विरोध करने वाले संसार के कल्याणकारी इन व्यावहारिक उपयोगी तत्त्वों के ज्ञान से अपने को तथा जगत् को वंचित रखना चाहते हैं। राजा को राज्य कार्य में सहायता देने तथा उसको नियन्त्रण में रखने के लिए समिति निर्माण का विधान भी है। राजा को सम्बोधन करके कहा गया है

ध्रुवोच्युत: प्र मृणीहि शत्रुञ्छत्रूयतोधरान्पादयस्व।
सर्वा दिश: संमनस: सध्रीचीर्ध्रुवाय ते समिति: कल्पतामिह।। - अथर्वेद ६/८८/३

तू दृढ़ तथा अडिग रहकर शत्रुओं तथा शत्रु जैसा आचरण करने वालों को मार दे, नीचे गिरा दे। तेरे राज्य के सब प्रदेशों में रहने वाली प्रजाएँ एक मन वाली तथा मिलजुल कर कार्य करने वाली हों। इस राज्य में तुझें दृढ़ रखने के लिए समिति समर्थ होवे, शक्तिशालिनी होवे। ऐसा प्रतीत होता है कि दो सभाएँ राजा को परामर्श देने के लिए होने चाहिए, एक का नाम सभा है दूसरी का नाम समिति है। यथा-

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने।
येना संगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु वदानि पितर: संगतेषु।। - अथर्ववेद ७/१२/१

प्रजापति की कन्याओं के समान ये सभा तथा समिति एकमत होकर मेरे कार्य की सिद्धि करें, जिस के साथ मेरा मेल हो, वह मुझे शिक्षा दें (अर्थात् राष्ट्र की यथार्थ स्थिति का बोध कराएँ) हे राष्ट्रपालको! जिससे मैं सम्मेलनों में सुन्दर बोलूँ। क्या यह आजकल की भाँति दो धारा सभाओं का निर्देश है अथवा धारा सभा Legislature और समिति Executive का संकेत है, अथवा सभा= Civil और समिति= Military Council का इशारा है? दो बातें इस मन्त्र में विशेष ध्यान देने योग्य हैं- एक तो सभाओं को प्रजापति की कन्याएँ बताया है, कन्या माननीय होती हैं। दूसरी यह कि उन दोनों में ऐकमत्य होना चाहिए। सभा के सम्बन्ध में एक मन्त्र और भी यहाँ देखना चाहिए।-

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि।
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचस:।। - अथर्ववेद ७/१२/२

हे सभे! तेरा नाम हम जानते हैं, तू सचमुच नरिष्ठा= जनहितकारिणी है। जो कोई तेरे सभासद् हों वे सब बोलने वाले-यथार्थ बोलने वाले हों, गूंगे न हों।

मनु महाराज ने मानो इसी का अनुवाद करते हुए कहा है-

सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा समञ्जसम्।
अब्रुवन्विब्रुवन्वाऽपि नरो भवति किल्बिषी।।
यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च।
हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासद:।। - मनु. ८/१३-१४

धार्मिक मनुष्य को योग्य है कि वह सभा में प्रवेश न

करे और जो प्रवेश किया हो तो सत्य ही बोले। जो कोई सभा में अन्याय होते हुए को देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरुद्ध बोले, वह पापी होता है। जिस सभा में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सभासदों के देखे मारा जाता है उस सभा में सब मृतक के समान हैं, जानो उनमें कोई भी नहीं जीता। इसी प्रकार ऋग्वेद ३/३८/६ में तीन सदः= सभाएँ= विभाग departments बनाने का विधान है-

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।

राजा और प्रजाजन मिलकर सुख प्राप्ति के लिए तीन सभाएँ बनाएँ। जो सब 'सदः' विभागों का संस्कार करें। ऋषियों ने इन तीन सभाओं का नाम विद्यार्य्यसभा, धर्मार्य्यसभा तथा राजार्य्यसभा बताया है। इस प्रकार वेद में राज्य कार्य के सम्बन्ध में मनन करने योग्य अनेक निर्देश हैं। मनुस्मृति में इसके सम्बन्ध में कई अध्याय हैं। जो इस विषय को विस्तार से देखना चाहें, वे सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास को ध्यान से पढ़ें।

हम ऊपर बता चुके हैं कि राष्ट्र रक्षा के साधनों का भी वेद में वर्णन है। अथर्ववेद के १२/१/१ मन्त्र में राष्ट्र धारण के आठ उपायों का उल्लेख हुआ है। अगले पृष्ठों में उन उपायों की विशद् किन्तु संक्षिप्त व्याख्या है। देहली के दीवानहॉल आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में लेखक ने २२ जनवरी से २६ जनवरी १९४७ ई. (६ माघ से १६ माघ सं.२००४ वि.) तक उक्त मन्त्र की कथा कही थी। कई महाशयों के अनुरोध पर उस कथा को लिपिबद्ध कर दिया गया है। उसमें पहले दिन की कथा जिसमें वेदस्वरूप का निरूपण था तथा कथा में कहे सामयिक दृष्टान्त तथा ऐतिहासिक उदाहरण छोड़ दिए हैं। यत्न किया गया है कि उन प्रवचनों के मूल शब्द बने रहें। हाँ, इतना अन्तर अवश्य करना पड़ा है जितना उक्त तथा लिखित भाषा में होता है। उतना अन्तर तो करना ही चाहिए था।

किसी को पसन्द आई अथवा आएगी, इस भावना से यह कथा नहीं लिखी गई। प्रत्युत् उपयोगी जानकर, जनसाधारण का इससे हित हो सकेगा, इस भाव से प्रेरक महाशयों की प्रेरणा को स्वीकार किया गया है।

वेद सनातन सत्य का उपदेशक है। इस विषय में भी वेद का उपदेश नितान्त, और सभी जातियों, देशों एवं राष्ट्रों के लिए हितकर है। लेखक का पूर्ण विश्वास है, जो इसका मनन पूर्वक अध्ययन कर इसके अनुसार अनुष्ठान करेगा, अवश्य उसका कल्याण होगा।

हमारे पुरातन नीतिकार भी वेद की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं। यथा-

व्यवस्थितार्था मर्यादः कृतवर्णाश्रमस्थितिः।
त्रय्या हि रचितो लोकः प्रसीदति न सीदति॥

- कौ. अ., विनया., ३। २७

जिस देश में आर्य मर्यादा सुव्यवस्थित है, वर्णाश्रम की मर्यादा का उचित पालन होता है, तथा जिस देश में वेद की रक्षा होती है, जहाँ वेदानुसार व्यवहार होता है वह देश फलता फूलता है, उसका विनाश कभी नहीं होता।

- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
(राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन)

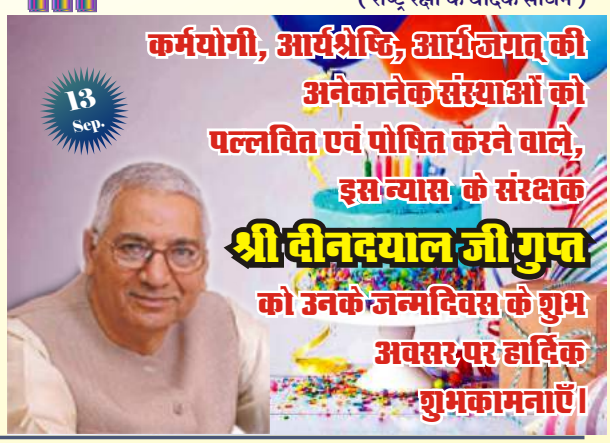

भाषा और लिपि

"शहीद-ए-आज़म भगत सिंह के विचार"

१९२४ के दौरान पंजाब में भाषा-विवाद चल रहा था। पंजाबी भाषा की लिपि के प्रश्न पर उर्दू और हिन्दी के पक्षधरों में बहस जारी थी। भगत सिंह भी इस बहस पर अपने विचार बनाने लगे थे। पंजाब की भाषा और लिपि की समस्या पर यह लेख उन्होंने पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आमन्त्रण पर लिखा था और अव्वल मानकर सम्मेलन ने इस पर ५०/- का ईनाम भी दिया था। यह लेख सम्मेलन के प्रधानमन्त्री श्री भीमसेन विद्यालंकार ने सुरक्षित रखा और भगत सिंह के बलिदान के बाद २८ फरवरी, १९३३ के 'हिन्दी सन्देश' में प्रकाशित किया।

'किसी समाज अथवा देश को पहचानने के लिए उस समाज अथवा देश के साहित्य से परिचित होने की परमावश्यकता होती है, क्योंकि समाज के प्राणों की चेतना उस समाज के साहित्य में भी प्रतिच्छवित हुआ करती है।'

उपरोक्त कथन की सत्यता का इतिहास साक्षी है। जिस देश के साहित्य का प्रवाह जिस ओर बहा, ठीक उसी ओर वह देश भी अग्रसर होता रहा। किसी भी जाति के उत्थान के लिए ऊँचे साहित्य की आवश्यकता हुआ करती है। ज्यों-ज्यों देश का साहित्य ऊँचा होता जाता है, त्यों-त्यों देश भी उन्नति करता जाता है। देशभक्त, चाहे वे निरे समाज-सुधारक हों अथवा राजनीतिक नेता, सबसे अधिक ध्यान देश के साहित्य की ओर दिया करते हैं। यदि वे सामाजिक समस्याओं तथा परिस्थितियों के अनुसार नवीन साहित्य की सृष्टि न करें तो उनके सब प्रयत्न निष्फल हो जायें और उनके कार्य स्थायी न हो पायें।

शायद गैरीबाल्डी को इतनी जल्दी सेनाएँ न मिल पातीं, यदि मेजिनी ने ३० वर्ष देश में साहित्य तथा साहित्यिक जागृति पैदा करने में ही न लगा दिये होते। आयरलैण्ड के पुनरुत्थान के साथ गैलिक भाषा के पुनरुत्थान का प्रयत्न भी उसी वेग से किया गया। शासक लोग आयरिश लोगों को दबाये रखने के लिए उनकी भाषा का दमन करना इतना आवश्यक समझते थे कि गैलिक भाषा की एक-आध कविता रखने के कारण छोटे-छोटे बच्चों तक को दण्डित किया जाता था। रूसो, वाल्टेयर के साहित्य के बिना फ्रांस की राज्यक्रान्ति घटित न हो पाती। यदि टालस्टाय, कार्ल मार्क्स तथा मैक्सिम गोर्की इत्यादि ने नवीन साहित्य पैदा करने में वर्षों व्यतीत न कर दिये होते, तो रूस की क्रान्ति न हो पाती, साम्यवाद का प्रचार तथा व्यवहार तो दूर रहा। यही दशा हम सामाजिक तथा धार्मिक सुधारकों में देख पाते हैं।

कबीर के साहित्य के कारण उनके भावों का स्थायी प्रभाव दीख पड़ता है। आज तक उनकी मधुर तथा सरस कविताओं को सुनकर लोग मुग्ध हो जाते हैं।

ठीक यही बात गुरु नानकदेव जी के विषय में भी कही जा सकती है। सिक्ख गुरुओं ने अपने मत के प्रचार के साथ जब नवीन सम्प्रदाय स्थापित करना शुरू किया, उस समय उन्होंने नवीन साहित्य की आवश्यकता भी अनुभव की और इसी विचार से गुरु अंगददेव जी ने गुरुमुखी लिपि बनायी। शताब्दियों तक निरन्तर युद्ध और मुसलमानों के आक्रमणों के कारण पंजाब में साहित्य की कमी हो गयी थी। हिन्दी भाषा का भी लोप-सा हो गया था। इस समय किसी भारतीय लिपि को ही अपनाने के लिए उन्होंने कश्मीरी लिपि को अपना लिया। तत्पश्चात् गुरु अर्जुनदेव जी तथा भाई गुरुदास जी के प्रयत्न से आदिग्रन्थ का संकलन हुआ। अपनी लिपि तथा अपना साहित्य बनाकर अपने मत को स्थायी रूप देने में उन्होंने यह बहुत प्रभावशाली तथा उपयोगी कदम उठाया था।

उसके बाद ज्यों-ज्यों परिस्थिति बदलती गयी, त्यों-त्यों साहित्य का प्रवाह भी बदलता गया। गुरुओं के निरन्तर बलिदानों तथा कष्ट-सहन से परिस्थिति बदलती गयी। जहाँ हम प्रथम गुरु के उपदेश में भक्ति तथा आत्मविस्मृति के भाव सुनते हैं और निम्नलिखित पद में कमाल आजिजी का भाव पाते हैं-

नानक नन्हे हो रहे, जैसी नन्हीं दूब।
और घास जरि जात है, दूब खूब की खूब।।

वहीं पर हम नवें गुरु श्री तेगबहादुर जी के उपदेश में पददलित लोगों की हमदर्दी तथा उनकी सहायता के भाव पाते हैं-

बाँहि जिन्हाँ दी पकड़िये,
सिर दीजिये बाँहि न छोड़िये।
गुरु तेगबहादुर बोलया,
धरती पै धर्म न छोड़िये।।

उनके बलिदान के बाद हम एकाएक गुरु गोविन्द सिंह जी के उपदेश में क्षात्र धर्म का भाव पाते हैं। जब उन्होंने देखा कि अब केवल भक्ति-भाव से ही काम न चलेगा, तो उन्होंने चण्डी की पूजा भी प्रारम्भ की और भक्ति तथा क्षात्र धर्म का समावेश कर सिक्ख समुदाय को भक्तों तथा योद्धाओं का समूह बना दिया। उनकी कविता (साहित्य) में हम नवीन भाव देखते हैं।

वे लिखते हैं-

जे तोहि प्रेम खेलण का चाव,
सिर धर तली गली मोरी आव।
जे इत मारग पैर धरीजै,
सिर दीजै कांण न कीजै।।

और फिर

सूरा सो पहिचानिये, जो लड़े दीन के हेत।
पुर्जा-पुर्जा कट मरै, कभूँ न छाँड़े खेत।।

और फिर एकाएक खड्ग की पूजा प्रारम्भ हो जाती है।

खग खण्ड विहण्ड,
खल दल खण्ड अति रन मण्ड प्रखण्ड।
भुज दण्ड अखण्ड,
तेज प्रचण्ड जोति अभण्ड भानुप्रभं।।

उन्हीं भावों को लेकर बाबा बन्दा आदि मुसलमानों के विरुद्ध निरन्तर युद्ध करते रहे, परन्तु उसके बाद हम देखते हैं कि जब सिक्ख सम्प्रदाय केवल अराजकों का एक समूह रह जाता है और जब वे गैर-कानूनी (Outlaw) घोषित कर दिये जाते हैं, तब उन्हें निरन्तर जंगलों में ही रहना पड़ता है। अब इस समय नवीन साहित्य की सृष्टि नहीं हो सकी। उनमें नवीन भाव नहीं भरे जा सके। उनमें क्षात्र-वृत्ति थी, वीरत्व तथा बलिदान का भाव था और मुसलमान शासकों के विरुद्ध युद्ध करते रहने का भाव था, परन्तु उसके बाद क्या करना होगा, यह वे भली-भाँति नहीं समझे। तभी तो उन वीर योद्धाओं के समूह (मिसलें) आपस में भिड़ गये। यहीं पर सामयिक भावों की त्रुटि बुरी तरह अखरती है। यदि बाद में रणजीत सिंह जैसा वीर योद्धा और चालाक शासक न निकल आता, तो

सिक्खों को एकत्रित करने के लिए कोई उच्च आदर्श अथवा भाव शेष न रह गया था।

इन सबके साथ एक बात और भी खास ध्यान देने योग्य है। संस्कृत का सारा साहित्य हिन्दू समाज को पुनर्जीवित न कर सका, इसीलिए सामयिक भाषा में नवीन साहित्य की सृष्टि की गयी। उस सामयिक भाव के साहित्य ने अपना जो प्रभाव दिखाया वही हम आज तक अनुभव करते हैं। एक अच्छे समझदार व्यक्ति के लिए क्लिष्ट संस्कृत के मन्त्र तथा पुरानी अरबी की आयतें इतनी प्रभावकारी नहीं हो सकतीं जितनी कि उसकी अपनी साधारण भाषा की साधारण बातें।

ऊपर पंजाबी भाषा तथा साहित्य के विकास का संक्षिप्त इतिहास लिखा गया है। अब हम वर्तमान अवस्था पर आते हैं। लगभग एक ही समय पर बंगाल में स्वामी विवेकानन्द तथा पंजाब में स्वामी रामतीर्थ पैदा हुए, दोनों एक ही ढर्रे के महापुरुष थे। दोनों विदेशों में भारतीय तत्त्वज्ञान की धाक जमाकर स्वयं भी जगत्-प्रसिद्ध हो गये, परन्तु स्वामी विवेकानन्द का मिशन बंगाल में एक स्थायी संस्था बन गया, पर पंजाब में स्वामी रामतीर्थ का स्मारक तक नहीं दीख पड़ता। उन दोनों के विचारों में भारी अन्तर रहने पर भी तह में हम एक गहरी समता देखते हैं। जहाँ स्वामी विवेकानन्द कर्मयोग का प्रचार कर रहे थे, वहाँ स्वामी रामतीर्थ भी मस्तानावार गाया करते थे-

हम रूखे टुकड़े खायेंगे, भारत पर वारे जायेंगे।
हम सूखे चने चबायेंगे, भारत की बात बनायेंगे।
हम नंगे उमर बितायेंगे, भारत पर जान मिटायेंगे।

वे कई बार अमेरिका में अस्त होते सूर्य को देखकर आँसू बहाते हुए कहा करते थे- 'तुम अब मेरे प्यारे भारत में उदय होने जा रहे हो। मेरे इन आँसुओं को भारत के सलिल सुन्दर खेतों में ओस की बूँदों के रूप में रख देना।' इतना महान् देश तथा ईश्वर-भक्त हमारे प्रान्त में पैदा हुआ हो, परन्तु उसका स्मारक तक न दीख पड़े, इसका कारण साहित्यिक फिसड्डीपन के अतिरिक्त क्या हो सकता है?

यह बात हम पद-पद पर अनुभव करते हैं। बंगाल के महापुरुष श्री देवेन्द्र ठाकुर तथा श्री केशवचन्द्र सेन की टक्कर के पंजाब में भी कई महापुरुष हुए हैं, परन्तु उनकी वह कद्र नहीं और मरने के बाद वे जल्द ही भुला दिये गये, जैसे ज्ञान सिंह जी इत्यादि। इन सबकी तह में हम देखते हैं कि एक ही मुख्य कारण है, और वह है साहित्यिक रुचि-जागृति का सर्वथा अभाव।

यह तो निश्चय ही है कि साहित्य के बिना कोई देश अथवा जाति उन्नति नहीं कर सकती, परन्तु साहित्य के लिए सबसे पहले भाषा की आवश्यकता होती है और पंजाब में वह नहीं है। इतने दिनों से यह त्रुटि अनुभव करते रहने पर भी अभी तक भाषा का कोई निर्णय न हो पाया। उसका मुख्य कारण है हमारे प्रान्त के दुर्भाग्य से भाषा को मजहबी समस्या बना देना। अन्य प्रान्तों में हम देखते हैं कि मुसलमानों में प्रान्तीय भाषा को खूब अपना लिया है। बंगाल के साहित्य-क्षेत्र में कवि नज़र-उल-इस्लाम एक चमकते सितारे हैं। हिन्दी कवियों में लतीफ हुसैन 'नटवर' उल्लेखनीय हैं। इसी तरह गुजरात में भी हैं, परन्तु दुर्भाग्य है पंजाब का। यहाँ पर मुसलमानों का प्रश्न तो अलग रहा, हिन्दू-सिक्ख भी इस बात पर न मिल सके।

पंजाब की भाषा अन्य प्रान्तों की तरह पंजाबी ही होनी चाहिए थी, फिर क्यों नहीं हुई, यह प्रश्न अनायास ही उठता है, परन्तु यहाँ के मुसलमानों ने उर्दू को अपनाया। मुसलमानों में भारतीयता का सर्वथा अभाव है, इसीलिए वे समस्त भारत में भारतीयता का महत्त्व न समझकर अरबी लिपि तथा फारसी भाषा का प्रचार करना चाहते हैं। समस्त भारत की एक भाषा और वह भी हिन्दी होने का महत्त्व उनकी समझ में नहीं आता। इसलिए वे तो अपनी उर्दू की रट लगाते रहे और एक ओर बैठ

गये।

फिर सिक्खों की बारी आयी। उनका सारा साहित्य गुरुमुखी लिपि में है। भाषा में अच्छी-खासी हिन्दी है, परन्तु मुख्य पंजाबी भाषा है। इसलिए सिक्खों ने गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली पंजाबी भाषा को ही अपना लिया। वे उसे किसी तरह छोड़ न सकते थे। वे उसे मजहबी भाषा बनाकर उससे चिपट गये।

इधर आर्यसमाज का आविर्भाव हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समस्त भारतवर्ष में हिन्दी प्रचार करने का भाव रखा। हिन्दी भाषा आर्यसमाज का एक धार्मिक अंग बन गयी। धार्मिक अंग बन जाने से एक लाभ तो हुआ कि सिक्खों की कट्टरता से पंजाब की रक्षा हो गयी और आर्यसमाजियों की कट्टरता से हिन्दी भाषा ने अपना स्थान बना लिया।

आर्यसमाज के प्रारम्भ के दिनों में सिक्खों तथा आर्यसमाजियों की धार्मिक सभाएँ एक ही स्थान पर होती थीं। तब उनमें कोई भिन्न भेदभाव न था, परन्तु पीछे 'सत्यार्थ प्रकाश' के किन्हीं दो-एक वाक्यों के कारण आपस में मनोमालिन्य बहुत बढ़ गया और एक-दूसरे से घृणा होने लगी। इसी प्रवाह में बहकर सिक्ख लोग हिन्दी भाषा को भी घृणा की दृष्टि से देखने लगे। औरों ने इसकी ओर किंचित भी ध्यान न दिया।

बाद में, कहते हैं कि आर्यसमाजी नेता महात्मा हंसराज जी ने लोगों से कुछ परामर्श किया था कि यदि वह हिन्दी लिपि को अपना लें, तो हिन्दी लिपि में लिखी जाने वाली पंजाबी भाषा यूनिवर्सिटी में मंज़ूर करवा लेंगे, परन्तु दुर्भाग्यवश वे लोग संकीर्णता के कारण और साहित्यिक जागृति के न रहने के कारण इस बात के महत्त्व को समझ ही न सके और वैसा न हो सका। खैर! तो इस समय पंजाब में तीन मत हैं। पहला मुसलमानों का उर्दू सम्बन्धी कट्टर पक्षपात, दूसरा आर्यसमाजियों तथा कुछ हिन्दुओं का हिन्दी सम्बन्धी, तीसरा पंजाबी का।

इस समय हम एक-एक भाषा के सम्बन्ध में कुछ विचार करें, तो अनुचित न होगा। सबसे पहले हम मुसलमानों का विचार रखेंगे। वे उर्दू के कट्टर पक्षपाती हैं। इस समय पंजाब में इसी भाषा का जोर भी है। कोर्ट की भाषा भी यही है, और फिर मुसलमान सज्जनों का कहना यह है कि उर्दू लिपि में ज्यादा बात थोड़े स्थान में लिखी जा सकती है। यह सब ठीक है, परन्तु हमारे सामने इस समय सबसे मुख्य प्रश्न भारत को एक राष्ट्र बनाना है। एक राष्ट्र बनाने के लिए एक भाषा होना आवश्यक है, परन्तु यह एकदम हो नहीं सकता। उसके लिए कदम-कदम चलना पड़ता है। यदि हम अभी भारत की एक भाषा नहीं बना सकते तो कम से कम लिपि तो एक बना देनी चाहिए। उर्दू लिपि तो सर्वांग सम्पूर्ण नहीं कहला सकती, और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसका आधार फारसी भाषा पर है। उर्दू कवियों की उड़ान, चाहे वे हिन्दी (भारतीय) ही क्यों न हों, ईरान के साकी और अरब की खजूरों को जा पहुँचती है। काजी नज़र-उल-इस्लाम की कविता में तो धूरजटी, विश्वामित्रा और दुर्वासा की चर्चा बार-बार है, परन्तु हमारे पंजाबी हिन्दी-उर्दू कवि उस ओर ध्यान तक भी न दे सके। क्या यह दुख की बात नहीं? इसका मुख्य कारण भारतीयता और भारतीय साहित्य से उनकी अनभिज्ञता है। उनमें भारतीयता आ ही नहीं पाती, तो फिर उनके रचित साहित्य से हम कहाँ तक भारतीय बन सकते हैं? केवल उर्दू पढ़ने वाले विद्यार्थी भारत के पुरातन साहित्य का ज्ञान नहीं हासिल कर सकते। यह नहीं कि उर्दू जैसी साहित्यिक भाषा में उन ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हो सकता, परन्तु उसमें ठीक वैसा ही अनुवाद हो सकता है, जैसाकि एक ईरानी को भारतीय साहित्य सम्बन्धी ज्ञानोपार्जन के लिए आवश्यक हो।

हम अपने उपरोक्त कथन के समर्थन में केवल इतना ही कहेंगे कि जब साधारण आर्य और स्वराज्य आदि शब्दों को आर्या और स्वराजिया लिखा और पढ़ा जाता है तो गूढ़ तत्त्वज्ञान सम्बन्धी विषयों की चर्चा ही

क्या? अभी उस दिन श्री लाला हरदयाल जी एम.ए. की उर्दू पुस्तक 'कौमें किस तरह जिन्दा रह सकतीं हैं?' का अनुवाद करते हुए सरकारी अनुवादक ने ऋषि नचिकेता को उर्दू में लिखा होने से नीची कुतिया समझकर 'ए बिच ऑफ लो ओरिजिन' अनुवाद किया था। इसमें न तो लाला हरदयाल जी का अपराध था, न अनुवादक महोदय का। इसमें कसूर था उर्दू लिपि का और उर्दू भाषा की हिन्दी भाषा तथा साहित्य से विभिन्नता का।

शेष भारत में भारतीय भाषाएँ और लिपियाँ प्रचलित हैं। ऐसी अवस्था में पंजाब में उर्दू का प्रचार कर क्या हम भारत से एकदम अलग-थलग हो जावें? नहीं। और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि उर्दू के कट्टर पक्षपाती मुसलमान लेखकों की उर्दू में फारसी का ही आधिक्य रहता है। 'जमींदार' और 'सियासत' आदि मुसलमान-समाचार पत्रों में तो अरबी का जोर रहता है, जिसे एक साधारण व्यक्ति समझ भी नहीं सकता। ऐसी दशा में उसका प्रचार कैसे किया जा सकता है? हम तो चाहते हैं कि मुसलमान भाई भी अपने मजहब पर पक्के रहते हुए ठीक वैसे ही भारतीय बन जायें जैसेकि कमाल टर्क (तुर्क) हैं। भारतोद्धार तभी हो सकेगा। हमें भाषा आदि के प्रश्नों को मार्मिक समस्या न बनाकर खूब विशाल दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

इसके बाद हम हिन्दी-पंजाबी भाषाओं की समस्या पर विचार करेंगे। बहुत-से आदर्शवादी सज्जन समस्त जगत् को एक राष्ट्र, विश्व राष्ट्र बना हुआ देखना चाहते हैं। यह आदर्श बहुत सुन्दर है। हमको भी इसी आदर्श को सामने रखना चाहिए। उस पर पूर्णतया आज व्यवहार नहीं किया जा सकता, परन्तु हमारा हर एक कदम, हमारा हर एक कार्य इस संसार की समस्त जातियों, देशों तथा राष्ट्रों को एक सुदृढ़ सूत्र में बाँधकर सुख-वृद्धि करने के विचार से उठना चाहिए। उससे पहले हमको अपने देश में यही आदर्श कायम करना होगा। समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, परन्तु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरूरी है, ताकि हम एक-दूसरे को भली-भाँति समझ सकें। एक पंजाबी और एक मद्रासी इकट्ठा बैठकर केवल एक-दूसरे का मुँह ही न ताका करें, बल्कि एक-दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें, परन्तु यह परायी भाषा अंग्रेजी में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान की अपनी भाषा हिन्दी में। यह आदर्श भी, पूरा होते-होते अभी कई वर्ष लगेंगे। उसके प्रयत्न में हमें सबसे पहले साहित्यिक जागृति पैदा करनी चाहिए। केवल गिनती के कुछेक व्यक्तियों में नहीं, बल्कि सर्वसाधारण में। सर्वसाधारण में साहित्यिक जागृति पैदा करने के लिए उनकी अपनी ही भाषा आवश्यक है। इसी तर्क के आधार पर हम कहते हैं कि पंजाब में पंजाबी भाषा ही आपको सफल बना सकती है।

अभी तक पंजाबी साहित्यिक भाषा नहीं बन सकी है और समस्त पंजाब की एक भाषा भी वह नहीं है। गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली मध्य पंजाब की बोलचाल की भाषा को ही इस समय तक पंजाबी कहा जाता है। वह न तो अभी तक विशेष रूप से प्रचलित ही हो पायी है और न ही साहित्यिक तथा वैज्ञानिक ही बन पायी है। उसकी ओर पहले तो किसी ने ध्यान ही नहीं दिया, परन्तु अब जो सज्जन उस ओर ध्यान भी दे रहे हैं उन्हें लिपि की अपूर्णता बेतरह अखरती है। संयुक्त अक्षरों का अभाव और हलन्त न लिख सकने आदि के कारण उसमें भी ठीक-ठीक सब शब्द नहीं लिखे जा सकते, और तो और, पूर्ण शब्द भी नहीं लिखा जा सकता। यह लिपि तो उर्दू से भी अधिक अपूर्ण है और जब हमारे सामने वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर निर्भर सर्वांग सम्पूर्ण हिन्दी लिपि विद्यमान है, फिर उसे अपनाने में हिचक क्या? गुरुमुखी लिपि तो हिन्दी अक्षरों का ही बिगड़ा हुआ रूप है। आरम्भ में ही उसका उ का X अ का A बना हुआ है और म ट ठ आदि तो वे ही अक्षर हैं। सब नियम मिलते हैं फिर एकदम उसे ही अपना लेने

से कितना लाभ हो जायेगा? सर्वांग सम्पूर्ण लिपि को अपनाते ही पंजाबी भाषा उन्नति करना शुरू कर देगी। और उसके प्रचार में कठिनाई ही क्या है? पंजाब की हिन्दू स्त्रियाँ इसी लिपि से परिचित हैं। डी. ए.वी. स्कूलों और सनातन धर्म स्कूलों में हिन्दी ही पढ़ाई जाती है। ऐसी दशा में कठिनाई ही क्या है? हिन्दी के पक्षपाती सज्जनों से हम कहेंगे कि निश्चय ही हिन्दी भाषा ही अन्त में समस्त भारत की एक भाषा बनेगी, परन्तु पहले से ही उसका प्रचार करने से बहुत सुविधा होगी। हिन्दी लिपि के अपनाने से ही पंजाबी हिन्दी की-सी बन जाती है। फिर तो कोई भेद ही नहीं रहेगा और इसकी जरूरत है, इसलिए कि सर्वसाधारण को शिक्षित किया जा सके और यह अपनी भाषा के अपने साहित्य से ही हो सकता है। पंजाबी की यह कविता देखिये-

ओ राहिया राहे जान्दया, सुन जा गल मेरी,
सिर ते पग तेरे वलैत दी, इहनूँ फूक मआतड़ा ला।।

और इसके मुकाबले में हिन्दी की बड़ी-बड़ी सुन्दर कविताएँ कुछ प्रभाव न कर सकेंगी, क्योंकि वह अभी सर्वसाधारण के हृदय के ठीक भीतर अपना स्थान नहीं बना सकी है। वह अभी कुछ बहुत परायी-सी दीख पड़ती है। कारण कि हिन्दी का आधार संस्कृत है। पंजाब उससे कोसों दूर हो चुका है। पंजाबी में फारसी ने अपना प्रभाव बहुत कुछ रखा है। यथा, चीज का जमा 'चीजें' न होकर फारसी की तरह 'चीजाँ' बन गया है। यह असूल अन्त तक कार्य करता दिखायी देता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि पंजाबी के निकट होने पर भी हिन्दी अभी पंजाबी-हृदय से काफी दूर है। हाँ, पंजाबी भाषा के हिन्दी लिपि में लिखे जाने पर और उसके साहित्य बनाने के प्रयत्न में निश्चय ही वह हिन्दी के निकटतर आ जायेगी।

प्रायः सभी मुख्य तर्कों पर तर्क किया जा चुका है। अब केवल एक बात कहेंगे। बहुत-से सज्जनों का कथन है कि पंजाबी भाषा में माधुर्य, सौन्दर्य और भावुकता नहीं है। यह सरासर निराधार है। अभी उस दिन-

लच्छीए जित्थे तू पानी डोलिया
ओत्थे उग पये सन्दल दे बूटे

वाले गाने के माधुर्य ने कवीन्द्र रवीन्द्र तक को मोहित कर लिया और वे झट अंग्रेजी में अनुवाद करने लगे-

O Lachi, where there spilt water, where there spilt water....etc...etc...

और बहुत-से और उदाहरण भी दिये जा सकते हैं। निम्न वाक्य क्या किसी अन्य भाषा की कविताओं से कम है?-

पिपले दे पत्ताया वे केही खड़खड़ लायी ऐ।
पत्तो झड़े पुराने हुण रुत्ता नवयाँ दी आयी आ।।

और फिर जब पंजाबी अकेला अथवा समूह बैठा हो तो 'गौहर' के ये पद जितना प्रभाव करेंगे, उतना कोई और भाषा क्या करेगी?

लाम लक्खाँ ते करोड़ाँ दे शाह
वेखे न मुसाफिराँ कोई उधार देंदा,
दिने रातीं जिन्हाँ दे कूच डेरे न
उन्हाँ दे थायीं कोई एतबार देंदा।
भौरे बहंदे गुलाँ दी वाशना ते ना
सप्पा दे मुहाँ ते कोई प्यार देंदा
गौहर समय सलूक हन ज्यूंदया दे
मोयाँ गियाँ नूँ हर कोई विसार देंदा।

और फिर-

जीम ज्यूदियाँ नूँ क्यों मारना ऐं,
जेकर नहीं तूं मोयाँ नूँ जिऔण जोगा
घर आये सवाली नूँ क्यों घूरना ऐं,
जेकर नहीं तू हत्थीं खैर पौण जोगा
मिले दिलाँ नूँ क्यों बिछोड़ना ऐं,
जेकर नहीं तू बिछड़याँ नू मिलौण जोगा
गौहरा बदीयाँ रख बन्द खाने,
जेकर नहीं तू नेकीआँ कमौण जोगा।

और फिर अब तो दर्द, मस्ताना, दीवाना बड़े अच्छे-अच्छे कवि पंजाबी की कविता का भण्डार बढ़ा रहे हैं। ऐसी मधुर, ऐसी विमुग्धकारी भाषा तो पंजाबियों ने ही न अपनायी, यही दुःख है। अब भी

नहीं अपनाते, समस्या यही है। हरेक अपनी बात के पीछे मजहबी डण्डा लिये खड़ा है। इसी अड़ंगे को किस तरह दूर किया जाये, यही पंजाब की भाषा तथा लिपि विषयक समस्या है, परन्तु आशा केवल इतनी है कि सिक्खों में इस समय साहित्यिक जागृति पैदा हो रही है। हिन्दुओं में भी है। सभी समझदार लोग मिलकर-बैठकर निश्चय ही क्यों नहीं कर लेते। यही एक उपाय है इस समस्या को हल करने का। मजहबी विचार से ऊपर उठकर इस प्रश्न पर गौर किया जा सकता है, वैसे ही किया जाये, और फिर अमृतसर के 'प्रेम' जैसे पत्र की भाषा को जरा साहित्यिक बनाते हुए पंजाब यूनिवर्सिटी में पंजाबी भाषा को मंजूर करा देना चाहिए। इस तरह सब बखेड़ा तय हो जाता है। इस बखेड़े के तय होते ही पंजाब में इतना सुन्दर और ऊँचा साहित्य पैदा होगा कि यह भी भारत की उत्तम भाषाओं में गिनी जाने लगेगी।

आर्य समाज की पहल

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2023

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2023

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com पर जाए।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

आजीवन सत्यार्थमित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बंधु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

पुनर्नवीनीकरण के झंझट से मुक्ति

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

हम सपत्नीक उदयपुर भ्रमण के लिए आये हैं। हम स्वयं को भाग्यशाली समझते हैं कि हमें ऐसे स्थान के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ महापुरुष दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की थी। भारत गौरव में चित्रों का चयन अत्यन्त उच्च कोटि का है और उनका वर्णन सम्बन्धित गाइड महोदय ने अत्यन्त ही अनूठे रूप में किया। इसके लिए प्रबन्धन व गाइड महोदय बधाई के पात्र हैं। आज ही मुझे पता चला कि हनुमान जी के 'पूँछ' नहीं थी और वे बन्दर स्वरूप नहीं थे वरन् अनकी 'पूछ' थी और वे वानर अर्थात् वन में रहने वाले मनुष्य थे। संस्थान को उच्च स्तर पर बनाए रखने के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

– देवेन्द्र कुमार सेठी, हापुड़

आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा एक बहुत ही उत्तम व अद्भुत प्रदर्शनी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार और पुरुषार्थ को प्रत्यक्ष करने का अवसर मिला। मन्दिर आदि स्थानों पर धन बरबाद करने के बजाए ऐसे उत्तम प्रदर्शनी भारतभर में बनवाने चाहिए। यहाँ का कार्य हर तरीके से सर्वोत्तम एवं बहुत ही उम्दा है।

– अल्पेश ए. पटेल, पूणे

रोगों के निदान व उपचार की तरह ही ज़रूरी है

समस्याओं के निदान के पश्चात् ही उनका निराकरण

जब भी कोई व्यक्ति बीमार होता है तो वो सीधे डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर रोगी का भली-भाँति परीक्षण करने के उपरांत ही अपेक्षित दवा देता है। यदि बाह्य लक्षणों व सामान्य जाँच से मर्ज़ पूरी तरह से डॉक्टर की समझ में नहीं आता है तो वो कुछ टेस्ट भी लिख देता है और उनकी रिपोर्ट आने के बाद ही मरीज़ का वास्तविक उपचार प्रारंभ करता है। रोग को ठीक से जाने बिना उसका उपचार करने के भयंकर परिणाम हो सकते हैं। केस बिगड़ सकता है और मरीज़ की मौत तक हो सकती है। यदि केस न भी बिगड़े तो मूल बीमारी तो ठीक होगी नहीं और जो उपचार किया गया है वह भी व्यर्थ जाएगा। इस स्थिति से बचने के लिए रोग का सही निदान या डायग्नोसिस अनिवार्य है। जीवन में उपस्थित होने वाली समस्याओं के विषय में भी यह फार्मूला पूरी तरह से लागू होता है। जब कोई नई समस्या उत्पन्न होती है तो हम प्रायः कहते हैं कि लो ये और एक बीमारी गले आ पड़ी। बिल्कुल ठीक ही तो कहते हैं।

हर समस्या भी एक बीमारी की तरह ही होती है और जब तक उसका सही निदान या डायग्नोसिस नहीं होता समस्या का समाधान करना भी असंभव नहीं तो कठिन ज़रूर होता है। जैसे ही हमारे सामने कोई समस्या उपस्थित होती है सबसे पहले हमें समस्या अथवा समस्या के स्वरूप को समझना चाहिए। प्रायः ऐसा होता है कि जैसे ही कोई समस्या उत्पन्न होती है हम फौरन उसके समाधान में जुट जाते हैं क्योंकि हम समस्या को जल्दी से जल्दी निपटा लेना चाहते हैं। कहा गया है कि जल्दी का काम शैतान का होता है। यह समस्या को और ख़राब कर सकता है। स्वाभाविक सी बात है कि जब भी कोई समस्या आती है तो हमारे हाथ-पाँव फूल जाते हैं। हम घबरा जाते हैं और घबराहट में एकदम सही निर्णय लेना संभव नहीं होता। इससे समस्या का तात्कालिक अपूर्ण अथवा आंशिक समाधान बेशक हो जाए पूरा अथवा अपेक्षित उचित समाधान असंभव है। यदि सतही तौर पर कोई फौरी हल निकाल भी लिया जाए तो वह समस्या बाद में विकराल रूप धारण कर सकती है इसलिए समस्या के मूल में जाकर उसे समूल नष्ट करना अनिवार्य है और यह तभी संभव है जब हम समस्या को पूरी तरह से जान लें। वैसे भी जब हम शांत होते हैं तो हमारा एकाग्र होना आसान हो जाता है और एकाग्रता की अवस्था में समस्या का कोई न कोई उचित समाधान भी सूझ ही जाता है।

परीक्षा में जब प्रश्नपत्र मिलता है तो सबसे पहले उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा जाना चाहिए। एक बार नहीं दो, तीन या चार बार तक जब तक अच्छी तरह से समझ में न आ जाए। इसीलिए आजकल विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए पंद्रह मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाता है। प्रश्नपत्र की तरह ही समस्या को ध्यानपूर्वक पढ़ना अथवा समझना ज़रूरी है। इसलिए जब भी कोई समस्या दरपेश आए हम फौरन

कोई भी क़दम न उठाएँ या प्रतिक्रिया न करें। समाधान करने या कोई भी स्टेप उठाने से पहले समस्या को बहुत अच्छी तरह से देखना-समझना व विश्लेषण करना बहुत ज़रूरी है। बहुत पुरानी घटना है। मेरे मामाजी की दुकान में मिट्टी तेल से भरे एक कनस्तर में आग लग गई। वहाँ सामान ख़रीदने आए एक व्यक्ति ने फौरन लपटों से घिरे उस मिट्टी तेल के कनस्तर को एक जूट की बोरी से पकड़कर दुकान से बाहर फेंक दिया। दुकान में भयंकर आग लग सकती थी उससे तो बच गए पर बाहर तेल फैलने और उसमें आग भड़कने से दुकान के बाहर बैठी मेरी नानी व अन्य कई लोग बुरी तरह से झुलस गए। कुछ घंटों के बाद मेरी नानी की तो मौत ही हो गई।

जब हम स्वयं किसी समस्या का समाधान करने में किसी भी प्रकार से सक्षम नहीं होते तो हमें स्वयं उसके समाधान के लिए आगे न आकर सही व्यक्ति या व्यक्तियों की मदद लेनी चाहिए। मान लीजिए कुछ दोस्त किसी नदी के किनारे पिकनिक मनाने जाते हैं। उनमें से दो दोस्त नदी में नहाने के लिए उतरते हैं। उन्हें नदी में कितना पानी है इसका बिल्कुल अनुमान नहीं है। वो दोनों जैसे ही नदी में थोड़ा आगे जाते हैं डूबने लगते हैं। उनको डूबता देखकर उनको बचाने के लिए उनका एक दोस्त फौरन नदी में छलाँग लगा देता है। डूबते हुए दोस्तों को बचाना तो दूर वह स्वयं उनसे पहले डूब जाता है। कारण स्पष्ट है कि डूबते हुए दोस्तों को बचाने का प्रयास करने के इच्छुक दोस्त को तैरना बिल्कुल नहीं आता था। उसका इरादा नेक था लेकिन भावना में बहकर लिया गया उसका निर्णय अविवेकपूर्ण व ग़लत था जिससे समस्या और बढ़ गई। समस्याओं के समाधान के संबंध में यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि हमें किसी समस्या को हल करने की कोई जानकारी, तरकीब अथवा अनुभव नहीं है तो हम स्वयं ज़्यादा माथापच्ची करने की बजाय किसी योग्य व्यक्ति अथवा विशेषज्ञ की सेवाएँ लेने का प्रयास करें।

किसी भी समस्या का समाधान विवेकपूर्ण तरीके से होना चाहिए। मान लीजिए आपको किसी से कुछ पैसे लेने हैं। वो व्यक्ति हमेशा टालमटोल करता रहता है। एक दिन आपने सख़्ती दिखलाई तो उसने कहा कि नहीं देता और जो करना है कर ले। आपने छुरा निकाला और घोंप दिया उसके पेट में। ये तो कोई समाधान नहीं हुआ। क्या आज ही ज़िंदगी का आख़िरी दिन है जो सबसे हिसाब पूरा करना है? समाधान की बजाय आपने अपना जीवन ही नष्ट कर डाला। आर्थिक हानि नाम की कोई चीज़ नहीं होती। जान है तो जहान है।

हर समस्या एक बीमारी की तरह ही होती है और जब तक उसका हल या समाधान नहीं हो जाता हम

केवल बेचैन ही नहीं रहते अपितु समस्या का हल या समाधान न होने पर सचमुच बीमार पड़ सकते हैं। क्योंकि समस्याओं का सीधा सम्बन्ध हमारे स्वास्थ्य से है अतः समस्याओं का हल या समाधान भी हमारे उपचार व अच्छे स्वास्थ्य में सहायक होता है। तो क्या समस्याओं का समाधान अथवा निराकरण भी बीमारियों की तरह ही किया जा सकता है? हाँ, अवश्य किया जा सकता है। जीवन में समस्याओं से मुक्ति असम्भव है। यदि समस्याएँ नहीं होंगी, परेशानियाँ नहीं आएँगी तो जीवन ही एक समस्या बन जाएगा। जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रह जाएगा क्योंकि प्रत्येक समस्या व्यक्ति के जीवन में बेहतर लाभ के अवसर लेकर उपस्थित होती है। इसलिए जीवन में समस्याओं से घबराकर भागिए मत अपितु

समस्याओं का स्वागत कीजिए उन्हें चुनौती के रूप में स्वीकार कीजिए और उनका हल खोजने का प्रयास कीजिए।

कभी-कभी अरुचिकर लगने वाले कार्य हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं और हम हैं कि उन कार्यों की लगातार उपेक्षा करते रहते हैं लेकिन जब हम उन्हें पूरा करने की ठान लेते हैं या उनमें रुचि लेने लगते हैं तो ये कार्य न केवल आसानी से पूरे हो जाते हैं अपितु हमें लाभ भी होता है। कई बार कुछ कामों को लेकर हमारे मन में एक डर समाया होता है लेकिन जब हम कार्य प्रारंभ कर देते हैं तो यह जानकर हैरान हो जाते हैं कि ये कार्य करना तो बच्चों का खेल था। जब आप ऐसे कार्य निपटाना शुरू करते हैं तो जैसे-जैसे आपके कार्य पूर्ण होते जाते हैं अथवा समस्याएँ सुलझती जाती हैं आपमें अभूतपूर्व उत्साह और आत्मविश्वास पैदा होने लगता है। इससे जीवन के सभी क्षेत्रों में लाभ मिलने लगता है।

पहले जो कार्य आपको समस्याएँ लगते थे अब एकदम साधारण लगने लगते हैं। यदि कोई बड़ी समस्या भी आ जाती है तो वो भी अत्यंत सामान्य दिखलाई पड़ती है और आसानी से हल कर ली जाती है। नए-नए कार्य अथवा उत्तरदायित्व जो आपको वहन करने होते हैं यदि आप उन्हें समस्याएँ भी कहते हैं तो इन समस्याओं को समाप्त करने की दिशा में फौरन अग्रसर हो जाइए अन्यथा ये समस्याएँ चिंताओं का रूप धारण कर आपकी प्रसन्नता को समाप्त कर देंगी। ये चिंताएँ ही तो हैं जो चिता या मौत के समान होती हैं। इनसे आप तनाव तथा अन्य मानसिक व्याधियों के शिकार हो जाते हैं। ये मानसिक व्याधियाँ ही बाद में शारीरिक व्याधियाँ बन कर आपका स्वास्थ्य क्षीण कर आपकी कार्य क्षमता समाप्त कर देती हैं तथा आपका सुख-चैन छीन लेती हैं। इन समस्या रूपी पौधों को पनपने मत दीजिए, उन्हें फौरन जड़ से उख़ाड़ फेंकिए।

तनाव आज के युग की सबसे भयंकर मानसिक व्याधि है। तनाव से ही अधिकतर शारीरिक रोग पैदा होते हैं। समस्याओं का हल न होने से व्यक्ति तनावग्रस्त हो जाता है और ये तनाव बढ़ता ही चला जाता है। समस्याओं का समाधान करके आप न केवल तनावजन्य मनोदैहिक रोगों से बच सकेंगे अपितु सदैव स्वस्थ, प्रसन्नचित्त तथा उत्साही भी बने रहेंगे। यदि सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त बने रहना है तो समस्याओं से भागने की अपेक्षा उनका मुक़ाबला कीजिए और एक-एक कर उन्हें समाप्त कर डालिए। समस्याओं का निराकरण किसी भी तरह एक उपचार पद्धति से कम नहीं।

- सीताराम गुप्ता
ए. डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०१/२३ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/२३ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्द्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्री गोपाल राव; निम्बाहेड़ा (राज), श्रीमती कमल कान्ता सहगल, पंचकूला (हरियाणा)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य	भवानीदास आर्य	डॉ. अमृत लाल तापड़िया
अध्यक्ष-न्यास	मंत्री-न्यास	संयुक्तमंत्री-न्यास

अंजीर का सेवन है लाभदायक

ड्राई फ्रूट्स को स्वास्थ्य के लिए कितना फायदेमन्द माना जाता है। अंजीर एक ऐसा फल है जिसे कच्चा और सूखा दोनों तरह से खाया जा सकता है। अंजीर (Anjeer Health Benefits) को अंग्रेजी में फिग कहा जाता है। दुनिया भर में अंजीर की कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इस फल का रंग हल्का पीला होता है, जबकि पकने के बाद गहरा सुनहरा या बैंगनी हो सकता है। अंजीर में पोटैशियम, मिनरल, कैल्शियम और विटामिन जैसे गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को कई लाभ पहुँचाने में मदद कर सकते हैं।

अंजीर खाने के लाभ

1. मोटापा-

मोटापा कम करने के लिए आप अंजीर को डाइट में शामिल कर सकते हैं। क्योंकि अंजीर एक लो कैलोरी फूड है, जो वजन को कम करने में मदद कर सकता है।

2. अस्थमा-

अस्थमा (Asthma) के मरीजों के लिए फायदेमन्द है अंजीर का सेवन। अंजीर खाने से शरीर के अन्दर म्यूकस झिल्लियों को नमी मिलती है और कफ साफ होता है। अस्थमा के मरीज इसे दूध के साथ खा सकते हैं।

3. इम्यूनिटी-

अंजीर को इम्यूनिटी (Immunity) के लिए काफी अच्छा फल माना जाता है। क्योंकि इसमें विटामिन, पोटैशियम, मिनरल, कैल्शियम के गुण पाए जाते हैं, जो इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मदद कर सकते हैं।

4. कब्ज-

अगर आपको कब्ज या पेट (Stomach) से जुड़ी समस्या रहती है, तो आप अंजीर का सेवन कर सकते हैं। अंजीर में पाए जाने वाले गुण पेट दर्द, गैस और कब्ज की समस्या से राहत दिला सकते हैं।

5. हड्डियों-

अंजीर में भरपूर मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद कर सकता है। अंजीर और दूध का सेवन कर कमजोर हड्डियों की समस्या से बच सकते हैं।

6. आयरन-

अगर आपके शरीर में आयरन (Iron) की कमी रहती है, तो अंजीर को भोजन में शामिल करना अच्छा ऑप्शन हो सकता है। अंजीर और दूध का सेवन करने से आयरन की कमी को दूर कर सकते हैं।

7. डायबिटीज-

अंजीर में फैटी एसिड और विटामिन पाए जाते हैं, जो डायबिटीज (Diabetes) में मददगार हो सकता है। इतना ही नहीं अंजीर फल का सेवन इंसुलिन को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है।

लेखक- अराधना सिंह

साभार- NDTV (द्वारा-अन्तर्जाल)

कथा सरित

मथुरा की वीथियों में वैसे भी भीड़भाड़ रहती है। और उस दिन तो लग रहा था कि कुछ ज्यादा ही भीड़ है। एक ओर यमुना प्रवाहित हो रही है तो दूसरी ओर ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ दृष्टिगोचर होतीं हैं। इनके बीच में एक संकरा सा मार्ग है जिसपर हमारा नायक वह युवा संन्यासी अपने कंधे पर पानी से भरा हुआ घड़ा लेकर तेजी के साथ जा रहा था। अभी-अभी उसने विश्राम घाट पर बडी सावधानी से साफ-साफ पानी को देखते हुए घड़े में पानी भरा था अब वह उसे गुरु के स्नान के लिए ले जा रहा था। लगता है गुरु के स्नान का समय हो गया था इसलिए दयानन्द तेज-तेज कदमों के साथ गुरु की कुटिया की ओर बढ़ा जा रहा था। जब वह कुटिया के द्वार पर पहुँचा तो एक सहपाठी मिल गए। उसने कहा दयानन्द तुम तो संन्यासी हो तुम्हें इस तरह के सेवा के कार्य नहीं करने चाहिए। दयानन्द ने मुस्कराकर के कहा कि गुरु की सेवा सर्वोपरि है। विद्या प्रदाता सर्वोच्च है, उससे बढ़कर कोई नहीं। यह तो एक बहुत मामूली सा काम है। अपने गुरु के लिए कोई भी कार्य करके प्रसन्न होऊँगा, वह मेरा सौभाग्य होगा। यह कहकर दयानन्द आगे बढ़ गए।

अनायास उनकी स्मृति में कुछ समय पूर्व की एक घटना कौंध गई। जब वे गुरु की कुटिया में झाड़ू लगा रहे थे। आज झाड़ू लगाकर कूड़ा एक कोने में इकट्ठा कर वे उसे भरने के लिए किसी पात्र की तलाश में थे, इसी मध्य उधर गुरु जी आ गए और गुरुजी का पैर उस कूड़े पर पड़ गया। फिर क्या था गुरु जी को अत्यन्त क्रोध आया और उन्होंने लाठी लेकर के दयानन्द की पिटाई की। दयानन्द के हाथ पर गहरा घाव भी आया। परन्तु दयानन्द तो दयानन्द थे। उनकी गुरु भक्ति को सारा संसार नमन कर सकता है। संन्यासी होने के बावजूद भी उनकी छड़ी से पिटाई हुई परन्तु वे नम्र भाव से गुरु के निकट गए और कहा कि गुरु जी मेरा शरीर तो वज्र के समान कठोर है, परन्तु आपके हाथ कोमल है वे दर्द करने लग गए होंगे, आइये मैं आपके हाथ दबा दूँ बाद में भी जब कभी दयानन्द का ध्यान अपने इस घाव पर पहुँचता था तो वे उसे सहलाते हुए अपने गुरु का स्मरण करते थे। नमन है ऐसी गुरुभक्ति को।

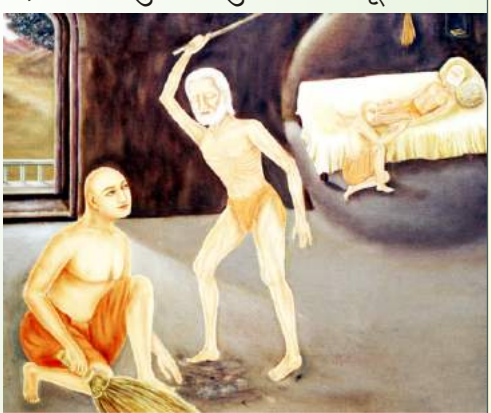

विद्या ग्रहण करते हुए अब लगभग ढ़ाई वर्ष का समय व्यतीत हो चुका था। गुरु दयानन्द की तीव्र मेधाशक्ति से बहुत प्रभावित थे। बल्कि कहा जाय तो अनुचित न होगा कि वे मुग्ध थे। गुरु जी ने अपने इस विद्यार्थी को कालजिह्व तथा कुलङ्कर की उपाधि दे रखी थी। शास्त्रार्थ में जिसकी ओजस्वी वाणी के अजस्र प्रवाह में विपक्षी निरुत्तर रह जाय वह कालजिह्व और जो सत्य होने के कारण अपने पक्ष में खूंटे के समान अविचलित रहे वह कुलङ्कर। परन्तु गुरु कठोर भी थे। वे दयानन्द के प्रति भी उदार न थे। एक बार दयानन्द किसी पाठ को भूल

गए तो गुरु ने इस बात को अपने ध्यान में नहीं रखा कि यह विद्यार्थी तो हमेशा ही अव्वल रहता है। उन्होंने भूलने के दोष को माफ नहीं किया वरन् उनको आज्ञा दी कि जब तक तुम्हें पाठ का स्मरण न हो जाए तब तक मेरे समक्ष मत आना। दयानन्द ने उनकी आज्ञा का पालन किया। इसी प्रकार की छोटी मोटी घटनाओं के चलते विद्या के अथाह समुद्र में से जी भर कर पान कर दयानन्द तृप्त हो गए। अब वह समय भी आ गया जब दयानन्द को गुरु से विदाई लेनी थी परन्तु दयानन्द इस सोच में पड़े थे कि उनके पास तो गुरु दक्षिणा में देने के लिए कुछ भी नहीं है। कहीं से माँगकर कुछ लौंग लेकर के आये और गुरु चरणों में भेंट करते हुए

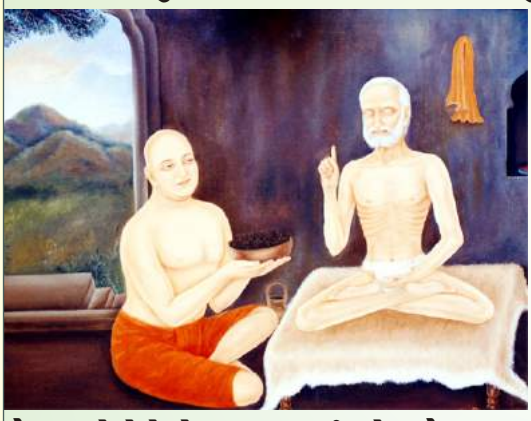

कहा कि गुरुजी मेरे पास कुछ भी नहीं है ये लौंग भी मैं कहीं से माँग के लाया हूँ। गुरु ने कहा दयानन्द मुझे तुमसे किसी भौतिक दक्षिणा की अपेक्षा नहीं है अगर देना चाहते हो तो अपना जीवनदान दो। वत्स इस भारत देश में आज वेद की शिक्षाओं को लोग भूल चुकें हैं। नाना प्रकार के अंधविश्वास और कुरीतियाँ यहाँ धर्म के नाम पर फलित होती देखी जा रही है। पूरा देश गुलामी की जंजीरों में तो जकड़ा ही है, साथ ही अपने गौरवशाली अतीत को भूल कर के वर्तमान की स्थिति को ही अपनी नियति मान चुका है। इनको वेदों के सत्य ज्ञान की ओर लौटा लाना तुम्हारा कर्तव्य है। मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी अगर तुम इस रास्ते पर चलने का संकल्प मेरे समक्ष लेते हो। दयानन्द ने तुरन्त ही तथास्तु कहकर के गुरु के चरणों में अपना शीश नवा दिया और कहा कि गुरु जी प्राण रहते हुए अपने संकल्प से विरत कभी नहीं होऊँगा। आपकी आज्ञा सदैव मेरी पथप्रदर्शिका होगी और मैं दुःखी भारत को वर्तमान कुव्यवस्थाओं, अविद्या, अंधकार, अधर्म की स्थापनाओं से बाहर निकालने का प्रयास करूँगा। इस प्रकार दयानन्द व्याकरण के सूर्य के प्रकाश से आप्लावित हो अपने गन्तव्य की ओर बढ़ चले।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

समाचार

दयानन्द कन्या विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में ७७वाँ स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त, २३ को हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉक्टर सतीश चन्द्र भारद्वाज ने ध्वाजारोहण किया। विशिष्ट अतिथि मनोज कुमार गाँधी, रामकुमार झंवर, राजकुमार गदिया ने विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ

में डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने स्वागत उद्बोधन व पुष्पा सिन्धी ने विद्यालय की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी ने आभार व्यक्त किया। संचालन शाला प्रधानाध्यापिका प्रेमलता मेनारिया ने किया। विद्यालय की बालिकाओं ने शारीरिक व्यायाम, आत्मरक्षा प्रदर्शन के साथ देश भक्ति गीत, हिन्दी-अंग्रेजी सम्भाषण, कविताएँ, राजस्थानी गीत नृत्य प्रस्तुत किये। आर्य समाज के प्रधान-भँवर लाल आर्य, मंत्री-वेद मित्र आर्य, कोषाध्यक्ष-रमेश जायसवाल, अम्बालाल सनाढ्य सहित अन्य सदस्यों, शाला अध्यापिकाओं, बालिकाओं के अभिभावक सहित अनेक जनसमूह देश भक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम का आनन्द लिया।

– रामदयाल मेहरा

आर्य रत्न पण्डित रतिराम शर्मा की स्मृति में व्याख्यान सत्र

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक द्वारा २१ जुलाई २०२३ को 'महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक दर्शन और सत्यार्थ प्रकाश के सन्देश को वैश्विक कैसे किया जाए' विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान सत्र आर्य समाज द्वारका के प्रधान डॉ. आनन्द शर्मा के पिता जी स्वर्गीय श्री रतिराम जी शर्मा की पुण्य स्मृति में आयोजित किया गया। इस व्याख्यान मे देश-विदेश के कई आर्य विद्वानों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा निर्धारित विषय पर अपने विचार विस्तार से रखे।

डॉ. आनन्द शर्मा ने आयोजन की पृष्ठभूमि बताई तथा विश्व में इसकी ज्वलन्त आवश्यकता को सामने रखा। कार्यक्रम का सफल संचालन वेनकुवंर, कनाडा से जुड़े श्री अश्विनी राजपाल ने किया। डॉ. कोमलचन्द्र राधाकिशन ने सत्यार्थ प्रकाश के वैश्विक सन्देश को प्रचारित करने के बिन्दु बताए।

श्री कृष्णकान्त शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित शिक्षा व्यवस्था का उल्लेख करते हुए आचारमूलक शिक्षा तथा पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. रविप्रकाश आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश का अर्थ बताते हुए इसमें वर्णित वैदिक मूल सिद्धान्तों पर विचार प्रकट किये।

ह्यूस्टन, अमेरिका से जुड़े आचार्य ब्रह्मदेव एवं त्रिनिडाड से जुड़े श्री विष्णु रामस्वरुप जी भी सम्मिलित हुए। लगभग दो घण्टे के इस कार्यक्रम में लगभग ६५ लोगों ने ऑनलाइन भागीदारी की।

– विनोद कालरा, मंत्री

३६५ दिन में ३६५ गुमनाम शहीद ढूँढ़ेंगे, सबकी दो-दो मिनट की क्लिप तैयार करेंगे, फिर फिल्म के रूप में सामने लाकर दिलाएँगे सम्मान

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गुमनाम शहीदों को लोगों के सामने लाने का अनोखा प्रयास कर रहा है। संगठन ऐसे वीर शहीदों का इतिहास खंगाल कर उन पर २-२ मिनट की वीडियो क्लिप बना रहा है।

न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने बताया कि ३६५ दिनों में ३६५ गुमनाम शहीदों का जीवन दर्शकों के समक्ष रखा जाएगा। अभी तक ऐसे ३५ शहीदों की जानकारी जुटाई जा चुकी है। आर्य ने बताया कि ३६५ शहीदों के वीडियो क्लिप जोड़कर बड़ा वृत्तचित्र बनाएँगे। इसमें प्रत्येक शहीद के बारे में कम से कम दो मिनट की जानकारी होगी। इसमें ऐसी भी शहीद होंगी, जिसने आजादी के लिए पति की जान तक ले ली थी। अन्त में इस वृत्तचित्र को आम जनता के समक्ष लाया जाएगा। ताकि हमारे देश के लोग जो इन शहीदों के बारे में नहीं जानते हैं, उन्हें इनकी जानकारी मिले। आर्य का कहना है कि देश दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती मना रहा है। इसको लेकर ही यह संकल्प लिया गया है।

दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की पहल
अब तक ३५ गुमनाम शहीद ढूँढ़ चुके
दयानन्द सरस्वती की जयन्ती पर संकल्प

न्यास की अगुवाई में गुमनाम शहीदों की याद में शनिवार को गुलाब बाग परिसर, नवलखा महल, सांस्कृतिक केन्द्र में कहानी सुनाओ प्रतियोगिता हुई। इसमें १० स्कूलों के ४० बच्चों ने हिस्सा लिया। मुख्य वक्ता सुविवि के संस्कृत विभाग के डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करना चाहिए। ऐसे आयोजन तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। निर्देशक अशोक बांठिया, विशिष्ट अतिथि श्रीनिवासन अय्यर, बीएन कॉलेज के प्रशंसनीय हैं। अगर हम उन्हें याद कर सकें मुख्य अतिथि बॉलीवुड अभिनेता एवं श्रमजीवी कॉलेज के पूर्व आचार्य डॉ. प्रोफेसर डॉ. हुसैनी बोहरा, कार्यालय मंत्री भँवरलाल सहित मंत्री भवानी दास आर्य, पुरोहित नवनीत आर्य, विनोद राठौड़, आभा आर्या, सुकृत मेहरा, रवीन्द्र राठौड़, डॉ. प्रशान्त अग्रवाल आदि, NMCC YOUTH के सदस्यगण, स्कूली बच्चों के साथ पदाधिकारी आदि मौजूद थें। संचालन नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा इकाई संयोजक ऋचा पीयूष ने किया।

– भँवर लाल गर्ग, कार्यालय मंत्री-न्यास

Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
CARRY ON MISSY
CAPRI
ANKLE LENGTH
CHURIDAR
85
Over 85 shades to choose from
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

जिस पुरुष के समाधियोग से अविद्यादि मल नष्ट हो गये हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिस ने लगाया है उस को जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है।

सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास पृष्ठ १८७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर